जुलाई 2022

हर घर तिरंगा

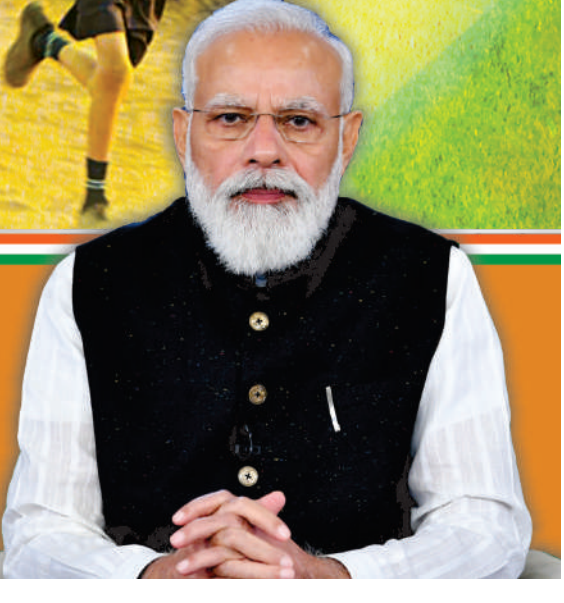

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का संदेश 1

02 प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख 13

2.1 जनभागीदारी से जन महोत्सव: आज़ाद भारत के 75 वर्षों का अमृत महोत्सव 14

2.1.1 मातृभूमि भारत को प्रणाम
पंडित अजय चक्रवर्ती का लेख 18

2.1.2 बदलाव की ओर अग्रसर भारत
डॉ. एस एल भैरप्पा का साक्षात्कार 20

2.1.3 विकास की पटरी पर गतिमान भारतीय रेलवे
अश्विनी वैष्णव का साक्षात्कार 22

2.2 सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए पारम्परिक सौगात : आयुष 28

2.2.1 इंडियन वर्चुअल हर्बेरियम : देश के वनस्पतियों का सबसे बड़ा डेटाबेस - डॉ. ए ए माओ का साक्षात्कार 32

2.2.2 आयुष : संवारे, सुधारे और स्वस्थ बनाए
कैलाश खैर का साक्षात्कार 34

2.3 भारत की मीठी क्रांति
मधुमक्खी पालन क्षेत्र की मधुर सफलता 36

2.3.1 ग्रामीण सशक्तीकरण में सहायक मीठी क्रांति
विनय कुमार सक्सेना का लेख 40

2.4 मेलों की संस्कृति
भारत की परम्परागत जीवंतता 46

2.4.1 माधवपुर घेड़ मेले का आनन्द और अनुभव
डॉ. हिमन्त बिस्व सरमा का लेख 50

2.5 भारतीय खिलौनों की कहानी
स्वदेशी खिलौना उद्योग का उदय 56

2.5.1 भारतीय खिलौनों का बढ़ता खेल मैदान
मनु गुप्ता का लेख 60

03 प्रतिक्रियाएँ 69

प्रधानमंत्री का संदेश

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार

'मन की बात' का ये 91वाँ एपिसोड है। हम लोगों ने पहले इतनी सारी बातें की हैं, अलग-अलग विषयों पर अपनी बात साझा की है, लेकिन, इस बार 'मन की बात' बहुत ख़ास है। इसका कारण है इस बार का स्वतंत्रता दिवस, जब भारत अपनी आज़ादी के 75 वर्ष पूरे करेगा। हम सभी बहुत अद्भुत और ऐतिहासिक पल के गवाह बनने जा रहे हैं। ईश्वर ने ये हमें बहुत बड़ा सौभाग्य दिया है। आप भी सोचिए, अगर हम गुलामी के दौर में पैदा हुए होते तो इस दिन की कल्पना हमारे लिए कैसी होती? गुलामी से मुक्ति की वो तड़प, पराधीनता की बेड़ियों से आज़ादी की वो बेचैनी - कितनी बड़ी रही होगी। वो दिन, जब हम हर दिन लाखों-लाख देशवासियों को आज़ादी के लिए लड़ते, जूझते, बलिदान देते देख रहे होते। जब हम, हर सुबह इस सपने के साथ जग रहे होते कि मेरा हिंदुस्तान कब आज़ाद होगा और हो सकता है हमारे जीवन में वो भी दिन आता जब वंदेमातरम् और भारत माँ की जय बोलते हुए हम आने वाली पीढ़ियों के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते, जवानी खपा देते।

साथियो, 31 जुलाई यानी आज ही के दिन हम सभी देशवासी शहीद उधम सिंह जी की शहादत को नमन करते हैं। मैं ऐसे अन्य सभी महान् क्रांतिकारियों को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ जिन्होंने देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

साथियो, मुझे ये देखकर बहुत ख़ुशी होती है कि 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' एक जन आंदोलन का रूप ले रहा है। सभी क्षेत्रों और समाज के हर वर्ग के लोग इससे जुड़े अलग-अलग कार्यक्रमों में हिस्सा ले रहे हैं। ऐसा ही एक कार्यक्रम इस महीने की शुरुआत में मेघालय में हुआ। मेघालय के बहादुर योद्धा ऊ. तिरोत सिंग जी की

पुण्यतिथि पर लोगों ने उन्हें याद किया। ऊ तिरोत सिंग जी ने खासी हिल्स (Khasi Hills) पर नियंत्रण करने और वहाँ की संस्कृति पर प्रहार करने की अंग्रेज़ों की साज़िश का जमकर विरोध किया था। इस कार्यक्रम में बहुत सारे कलाकारों ने सुंदर प्रस्तुतियाँ दी। इतिहास को ज़िंदा कर दिया। इसमें एक कार्निवल का आयोजन भी किया गया, जिसमें मेघालय की महान् संस्कृति को बड़े ही खूबसूरत तरीके से दर्शाया गया। अब से कुछ हफ्ते पहले कर्नाटक में अमृता भारती कन्नडार्थी नाम का एक अनूठा अभियान भी चलाया गया। इसमें राज्य की 75 जगहों पर आज़ादी के अमृत महोत्सव से जुड़े बड़े भव्य कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें कर्नाटक के महान् स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने के साथ ही स्थानीय साहित्यिक उपलब्धियों को भी सामने लाने की कोशिश की गई।

साथियो, इसी जुलाई में एक बहुत ही रोचक प्रयास हुआ है जिसका नाम है - आज़ादी की रेलगाड़ी और रेलवे स्टेशन। इस प्रयास का लक्ष्य है कि लोग आज़ादी की लड़ाई में भारतीय रेल की भूमिका को जानें। देश में अनेक ऐसे रेलवे स्टेशन हैं जो स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास से जुड़े हैं। आप भी, इन रेलवे स्टेशनों के बारे में जानकार हैरान होंगे। झारखंड के गोमो जंक्शन को अब आधिकारिक रूप से नेताजी सुभाष चंद्र बोस जंक्शन गोमो के नाम से जाना जाता है। जानते हैं क्यों? दरअसल इसी स्टेशन पर कालका मेल में सवार होकर नेताजी सुभाष ब्रिटिश अफसरों को चकमा देने में सफल रहे थे। आप सभी ने लखनऊ के पास काकोरी रेलवे स्टेशन का नाम भी ज़रूर सुना होगा। इस स्टेशन के साथ राम प्रसाद 'बिस्मिल' और अशफाकउल्लाह खान जैसे जाँबाज़ों का नाम जुड़ा है। यहाँ ट्रेन से जा रहे अँग्रेज़ों के ख़ज़ाने को

लूटकर वीर क्रांतिकारियों ने अँग्रेज़ों को अपनी ताक़त का परिचय करा दिया था। आप जब कभी तमिलनाडु के लोगों से बात करेंगे तो आपको थुथुकुडी जिले के वान्ची मणियाच्ची जंक्शन के बारे में जानने को मिलेगा। ये स्टेशन तमिल स्वतंत्रता सेनानी वान्चीनाथन जी के नाम पर है। ये वही स्थान है जहाँ 25 साल के युवा वान्ची ने ब्रिटिश कलेक्टर को उसके किए की सज़ा दी थी।

साथियो, ये लिस्ट काफ़ी लम्बी है। देशभर के 24 राज्यों में फैले ऐसे 75 रेलवे स्टेशनों की पहचान की गई है। इन 75 स्टेशनों को बहुत ही खूबसूरती से सजाया जा रहा है। इनमें कई तरह के कार्यक्रमों का भी आयोजन हो रहा है। आपको भी समय निकालकर अपने पास के ऐसे ऐतिहासिक स्टेशन पर ज़रूर जाना चाहिए। आपको, स्वतंत्रता आंदोलन के ऐसे इतिहास के बारे में विस्तार से पता चलेगा जिनसे आप अनजान रहे हैं। मैं आसपास के स्कूल के विद्यार्थियों से आग्रह करूँगा, टीचर्स से आग्रह करूँगा कि अपने स्कूल के छोटे-छोटे बच्चों को ले करके ज़रूर स्टेशन पर जाएँ और पूरा घटनाक्रम उन बच्चों को सुनाएँ, समझाएँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज़ादी के अमृत महोत्सव के तहत 13 से 15 अगस्त तक एक स्पेशल मूवमेंट - 'हर घर तिरंगा-हर घर तिरंगा' का आयोजन किया जा रहा है। इस मूवमेंट का हिस्सा बनकर 13 से 15 अगस्त तक आप अपने घर पर तिरंगा ज़रूर फहराएँ, या उसे अपने घर पर लगाएँ। तिरंगा हमें जोड़ता है, हमें देश के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित करता है। मेरा एक सुझाव ये भी है कि 2 अगस्त से 15 अगस्त तक हम

सभी अपनी सोशल मीडिया प्रोफाइल पिक्चर में तिरंगा लगा सकते हैं। वैसे क्या आप जानते हैं, 2 अगस्त का हमारे तिरंगे से एक विशेष संबंध भी है। इसी दिन पिंगलि वेंकय्या जी की जन्म-जयंती होती है जिन्होंने हमारे राष्ट्रीय ध्वज को डिज़ाइन किया था। मैं उन्हें आदरपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। अपने राष्ट्रीय ध्वज के बारे में बात करते हुए मैं, महान क्रांतिकारी मैडम कामा को भी याद करूँगा। तिरंगे को आकार देने में उनकी भूमिका बेहद महत्वपूर्ण रही है।

साथियो, आज़ादी के अमृत महोत्सव में हो रहे इन सारे आयोजनों का सबसे बड़ा संदेश यही है कि हम सभी देशवासी अपने कर्त्तव्य का पूरी निष्ठा से पालन करें। तभी हम उन अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों का सपना पूरा कर पाएँगे। उनके सपनों का भारत बना पाएँगे। इसीलिए हमारे अगले 25 साल का ये अमृतकाल हर देशवासी के लिए कर्त्तव्यकाल की तरह है। देश को आज़ाद कराने हमारे वीर सेनानी हमें ये ज़िम्मेदारी देकर गए हैं, और हमें इसे पूरी तरह निभाना है।

मेरे प्यारे देशवासियो, कोरोना के ख़िलाफ़ हम देशवासियों की लड़ाई अब भी जारी है। पूरी दुनिया आज भी जूझ रही है। होलिस्टिक हेल्थकेयर में लोगों की बढ़ती रुचि ने इसमें सभी की बहुत मदद की है। हम सभी जानते हैं कि इसमें भारतीय पारम्परिक पद्धतियाँ कितनी उपयोगी हैं। कोरोना के ख़िलाफ़ लड़ाई में आयुष ने तो वैश्विक स्तर पर अहम भूमिका निभाई है। दुनियाभर में आयुर्वेद और भारतीय औषधियों के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। ये एक बड़ी वजह है कि आयुष एक्सपोर्ट्स में रिकॉर्ड तेज़ी आई है और ये भी बहुत सुखद है कि इस क्षेत्र में कई नए स्टार्ट-अप्स भी सामने आ रहे हैं। हाल ही में एक ग्लोबल आयुष इंवेस्टमेंट और इनोवेशन समिट हुई थी। आप जानकर हैरान होंगे कि इसमें करीब दस हज़ार करोड़ रुपये के इंवेस्टमेंट प्रोपोज़ल्स मिले हैं। एक और बड़ी अहम बात ये

हुई है कि कोरोना काल में औषधीय पौधों पर रिसर्च में भी बहुत वृद्धि हुई है। इस बारे में बहुत-सी रिसर्च स्टडीज़ पब्लिश हो रही हैं। निश्चित रूप से एक अच्छी शुरुआत है।

साथियो, देश में विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधों और जड़ी-बूटियों को लेकर एक और बेहतरीन प्रयास हुआ है। अभी-अभी जुलाई महीने में इंडियन वर्चुअल हर्बेरियम को लॉन्च किया गया। यह इस बात का भी उदाहरण है कि कैसे हम डिजिटल वर्ल्ड का इस्तेमाल अपनी जड़ों से जुड़ने में कर सकते हैं। इंडियन वर्चुअल हर्बेरियम, प्रिज़र्व्ड प्लांट्स या प्लांट पार्ट्स की डिजिटल इमेजेज का एक रोचक संग्रह है, जो कि वेब पर फ्रीली अवेलेबल है। इस वर्चुअल हर्बेरियम पर अभी लाख से अधिक स्पेसिमेन्स और उनसे जुड़ी साइंटिफिक इंफॉर्मेशन उपलब्ध है। वर्चुअल हर्बेरियम में भारत की बोटैनिकल डाइवर्सिटी की समृद्ध तस्वीर भी दिखाई देती है। मुझे विश्वास है इंडियन वर्चुअल हर्बेरियम,

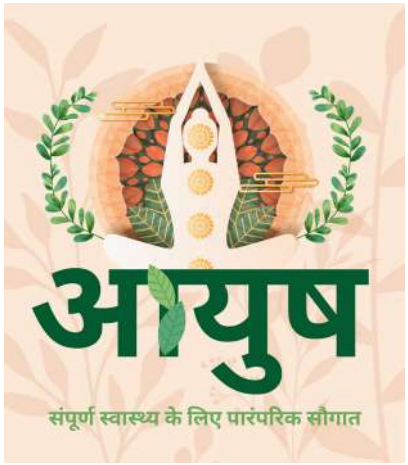

भारतीय वनस्पतियों पर रिसर्च के लिए एक इम्पोर्टेन्ट रिसॉर्स बनेगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में हम हर बार देशवासियों की ऐसी सफलताओं की चर्चा करते हैं जो हमारे चेहरे पर मीठी मुस्कान बिखेर देती हैं। अगर कोई सक्सेस स्टोरी, मीठी मुस्कान भी बिखेरे और स्वाद में भी मिठास भरे, तब तो आप इसे ज़रूर सोने पर सुहागा कहेंगे। हमारे किसान इन दिनों शहद

राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन और शहद मिशन:

'मीठी क्रांति' की ओर बढ़ता भारत

के उत्पादन में ऐसा ही कमाल कर रहे हैं। शहद की मिठास हमारे किसानों का जीवन भी बदल रही है, उनकी आय भी बढ़ा रही है। हरियाणा के यमुनानगर में एक मधुमक्खी पालक साथी रहते हैं - सुभाष कम्बोजजी। सुभाषजी ने वैज्ञानिक तरीक़े से मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण लिया। इसके बाद उन्होंने केवल छह बॉक्स के साथ अपना काम शुरू किया था। आज वो क़रीब दो हज़ार बॉक्सेस में मधुमक्खी पालन कर रहे हैं। उनका शहद कई राज्यों में सप्लाई होता है। जम्मू के पल्ली गाँव में विनोद कुमारजी भी डेढ़ हज़ार से ज़्यादा कॉलोनियों में मधुमक्खी पालन कर रहे हैं। उन्होंने पिछले साल, रानी मक्खी पालन का प्रशिक्षण लिया है। इस काम से वे सालाना 15 से 20 लाख रुपये कमा रहे हैं। कर्नाटक के एक और किसान हैं- मधुकेश्वर हेगड़े जी। मधुकेश्वरजी ने बताया कि उन्होंने भारत सरकार से 50 मधुमक्खी कॉलोनियों के लिए सब्सिडी ली थी। आज उनके पास 800 से ज़्यादा कॉलोनियाँ हैं, और वो कई टन शहद बेचते हैं। उन्होंने अपने काम में इनोवेशन किया और वो जामुन शहद, तुलसी शहद, आंवला शहद जैसे वानस्पतिक शहद भी बना रहे हैं। मधुकेश्वरजी, मधु उत्पादन में आपके इनोवेशन और सफलता, आपके नाम को भी सार्थक करती है।

साथियो, आप सब जानते हैं कि शहद को हमारे पारम्परिक स्वास्थ्य विज्ञान में कितना महत्व दिया गया है। आयुर्वेद ग्रंथों में तो शहद को अमृत बताया गया है। शहद, न केवल हमें स्वाद देता है, बल्कि आरोग्य भी देता है। शहद उत्पादन में आज इतनी अधिक सम्भावनाएँ हैं कि प्रोफेशनल पढ़ाई करने वाले युवा भी इसे अपना स्वरोज़गार बना रहे हैं। ऐसे ही एक युवा हैं- यू.पी. में गोरखपुर के निमित सिंह। निमित जी ने बी.टेक किया है। उनके पिता भी डॉक्टर हैं, लेकिन, पढ़ाई के बाद नौकरी की जगह निमित जी ने स्वरोज़गार का फैसला लिया। उन्होंने शहद उत्पादन का काम शुरू किया। क्वालिटी चेक के लिए लखनऊ में अपनी एक लैब भी बनवाई। निमित जी अब शहद और बी वैक्स से अच्छी कमाई कर रहे हैं, और अलग-अलग राज्यों में जाकर किसानों को प्रशिक्षित भी कर

रहे हैं। ऐसे युवाओं की मेहनत से ही आज देश इतना बड़ा शहद उत्पादक बन रहा है। **आपको जानकर ख़ुशी होगी कि देश से शहद का निर्यात भी बढ़ गया है। देश ने नेशनल बीकीपिंग एंड हनी मिशन जैसे अभियान चलाए, किसानों ने पूरा परिश्रम किया, और हमारे शहद की मिठास दुनिया तक पहुँचने लगी। अभी इस क्षेत्र में और भी बड़ी सम्भावनाएँ मौजूद हैं। मैं चाहूँगा कि हमारे युवा इन अवसरों से जुड़कर उनका लाभ लें और नई सम्भावनाओं को साकार करें।**

मेरे प्यारे देशवासियो, मुझे हिमाचल प्रदेश से 'मन की बात' के एक श्रोता, श्रीमान आशीष बहल जी का एक पत्र मिला है। उन्होंने अपने पत्र में चम्बा के 'मिंजर मेले' का ज़िक्र किया है। दरअसल, मिंजर मक्के के फूलों को कहते हैं। जब मक्के में मिंजर आते हैं, तो मिंजर मेला भी मनाया जाता है और इस मेले में देशभर के पर्यटक दूर-दूर से हिस्सा लेने के लिए आते हैं। संयोग से मिंजर मेला इस समय चल भी रहा है। आप अगर हिमाचल घूमने गए हुए हैं तो इस मेले को देखने चम्बा जा सकते हैं। चम्बा तो इतना खूबसूरत है कि यहाँ के लोक-गीतों में बार-बार कहा जाता है-

"चम्बे इक दिन ओणा कने महीना रैणा"।

यानी, जो लोग एक दिन के लिए चम्बा आते हैं, वे इसकी खूबसूरती देखकर महीने भर यहाँ रह जाते हैं।

साथियो, हमारे देश में मेलों का भी बड़ा सांस्कृतिक महत्व रहा है। मेले, जन-मन दोनों को जोड़ते हैं। हिमाचल में वर्षा के बाद जब ख़रीफ़ की फ़सलें पकती हैं, तब सितम्बर में शिमला, मंडी, कुल्लू और सोलन में सैरी या सैर भी मनाया जाता है। सितम्बर में ही जागरा भी आने वाला है। जागरा के मेलों में महासू देवता का आह्वान करके बीसू गीत गाए जाते हैं। महासू देवता का ये जागर हिमाचल में शिमला, किन्नौर और सिरमौर के साथ-साथ उत्तराखंड में भी होता है।

साथियो, हमारे देश में अलग-अलग राज्यों में आदिवासी समाज के भी कई पारम्परिक मेले होते हैं। इनमें से कुछ मेले आदिवासी संस्कृति से जुड़े

हैं, तो कुछ का आयोजन, आदिवासी इतिहास और विरासत से जुड़ा है, जैसे कि आपको अगर मौका मिले तो तेलंगाना के मेडारम का चार दिवसीय समक्का-सरलम्मा जातरा मेला देखने ज़रूर जाइए। इस मेले को तेलंगाना का महाकुम्भ कहा जाता है। सरलम्मा जातरा मेला, दो आदिवासी महिला नायिकाओं-समक्का और सरलम्मा के सम्मान में मनाया जाता है। ये तेलंगाना ही नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश के कोया आदिवासी समुदाय के लिए आस्था का बड़ा केंद्र है। आंध्र प्रदेश में मारीदम्मा का मेला भी आदिवासी समाज की मान्यताओं से जुड़ा बड़ा मेला है। मारीदम्मा मेला जयेष्ठ अमावस्या से आषाढ़ अमावस्या तक चलता है और यहाँ का आदिवासी समाज इसे शक्ति उपासना के साथ जोड़ता है। यहीं, पूर्वी गोदावरी के पेद्दापुरम में मरिदम्मा मंदिर भी है। इसी तरह राजस्थान में गरासिया जनजाति के लोग वैशाख शुक्ल चतुर्दशी को 'सियावा का मेला' या 'मनखाँ रो मेला' का आयोजन करते हैं।

छत्तीसगढ़ में बस्तर के नारायणपुर का 'मावली मेला' भी बहुत ख़ास होता है। पास ही, मध्य प्रदेश का 'भगोरिया मेला' भी खूब प्रसिद्ध है। कहते हैं कि भगोरिया मेले की शुरुआत राजा भोज के समय में हुई है। तब भील राजा, कासूमरा और बालून ने अपनी-अपनी राजधानी में पहली बार ये आयोजन किए थे। तब से आज तक ये मेले उतने ही उत्साह से मनाए जा रहे हैं। इसी तरह, गुजरात में तरणेतर और माधोपुर जैसे कई मेले बहुत मशहूर हैं। **'मेले', अपने आप में हमारे समाज, जीवन की ऊर्जा का बहुत बड़ा स्रोत होते हैं। आपके आस-पास भी ऐसे ही कई मेले होते होंगे। आधुनिक समय में समाज की ये पुरानी कड़ियाँ 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना को मज़बूत करने के लिए बहुत ज़रूरी हैं। हमारे युवाओं को इनसे ज़रूर जुड़ना चाहिए और आप जब भी ऐसे मेलों में जाएँ, वहाँ की तस्वीरें सोशल मीडिया पर भी शेयर करें। आप चाहें तो किसी ख़ास हैशटैग का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे उन मेलों के बारे में दूसरे लोग भी जानेंगे। आप कल्चर मिनिस्ट्री की वेबसाइट पर भी तस्वीरें अपलोड कर सकते हैं। अगले कुछ दिन में कल्चर मिनिस्ट्री एक कम्पीटिशन भी शुरू करने जा रही है, जहाँ मेलों की सबसे अच्छी तस्वीरें भेजने वालों को ईनाम भी दिया जाएगा, तो फिर**

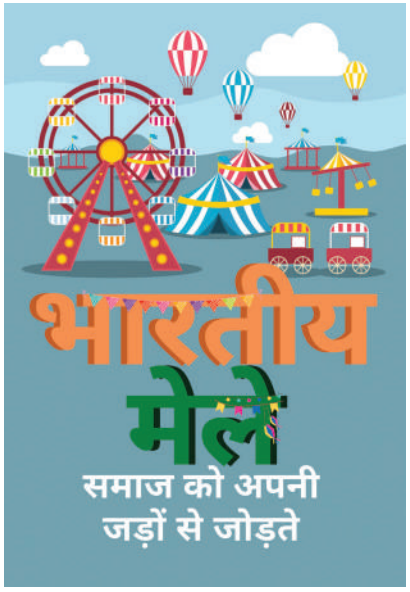

देर नहीं कीजिए, मेलों में घूमिए, उनकी तस्वीरें साझा करिए, और हो सकता है आपको इसका ईनाम भी मिल जाए।

मेरे प्यारे देशवासियो, आपको ध्यान होगा, 'मन की बात' के एक एपिसोड में मैंने कहा था कि भारत के पास टॉयज एक्सपोर्ट्स में पावरहाउस बनने की पूरी क्षमता है। मैंने स्पोर्ट्स और गेम्स में भारत की समृद्ध विरासत की ख़ासतौर पर चर्चा की थी। भारत के स्थानीय खिलौने - परम्परा और प्रकृति, दोनों के अनुरूप होते हैं, इको-फ्रेंडली होते हैं। मैं आज आपके साथ भारतीय खिलौनों की सफलता को शेयर करना चाहता हूँ। हमारे यंगस्टर्स, स्टार्ट-अप्स और आंत्रप्रेन्योर्स के बूते हमारी टॉय इंडस्ट्री ने जो कर दिखाया है, जो सफलताएँ हासिल की हैं, उसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। आज, जब भारतीय खिलौनों की बात होती है, तो हर तरफ़ वोकल फॉर लोकल की ही गूँज सुनाई दे रही है। आपको ये जानकर भी अच्छा लगेगा कि भारत में अब विदेश से आने वाले खिलौनों की संख्या लगातार कम हो रही है। पहले जहाँ 3 हज़ार करोड़ रुपये से ज़्यादा के खिलौने बाहर से आते थे, वहीं अब इनका आयात 70 प्रतिशत तक घट गया है और ख़ुशी की बात यह कि इसी दौरान भारत ने दो हज़ार छह सौ करोड़ रुपये से अधिक के खिलौनों को विदेशों में निर्यात किया है, जबकि पहले, 300-400 करोड़ रुपये के खिलौने ही भारत से बाहर जाते थे और आप तो जानते ही हैं कि ये सब कोरोना काल में हुआ है। भारत के टॉय सेक्टर ने ख़ुद को ट्रांसफॉर्म करके दिखा दिया है। इंडियन मनुफैक्चर्स, अब इंडियन माइथोलॉजी, हिस्ट्री और कल्चर पर आधारित खिलौने बना रहे हैं। देश में जगह-जगह खिलौनों के जो क्लस्टर्स हैं, खिलौने बनाने वाले जो छोटे-छोटे उद्यमी हैं, उन्हें इसका

बहुत लाभ हो रहा है। इन छोटे उद्यमियों के बनाए खिलौने अब दुनियाभर में जा रहे हैं। भारत के खिलौना निर्माता विश्व के प्रमुख ग्लोबल टॉय ब्रांड्स के साथ मिलकर भी काम कर रहे हैं। मुझे ये भी बड़ा अच्छा लगा कि हमारा स्टार्ट-अप सेक्टर भी खिलौनों की दुनिया पर पूरा ध्यान दे रहा है। वे इस क्षेत्र में कई मज़ेदार चीज़ें भी कर रहे हैं। बेंगलुरु में Shumme (शूमी) Toys नाम का स्टार्ट-अप इको-फ्रेंडली खिलौनों पर फोकस कर रहा है। गुजरात में Arkidzoo (आर्किड्ज़ू) कम्पनी एआर-बेस्ड फ़्लैश काड्र्स और एआर-बेस्ड स्टोरीबुक्स बना रही हैं। पुणे की कम्पनी, Funvention (फन्वेंशन) लर्निंग, खिलौने और एक्टिविटी पज़ल्स के जरिए साइंस, टेक्नोलॉजी और मैथ्स में बच्चों की दिलचस्पी बढ़ाने में जुटी है। **मैं खिलौनों की दुनिया में शानदार काम कर रहे ऐसे सभी मैन्यूफैक्चर्स को स्टार्ट-अप्स को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। हम सब मिलकर भारतीय खिलौनों को दुनियाभर में और अधिक लोकप्रिय बनाएँ। इसके साथ ही मैं अभिभावकों से भी आग्रह करना चाहूँगा कि वे अधिक-से-अधिक भारतीय खिलौने पज़ल्स और गेम्स खरीदें।**

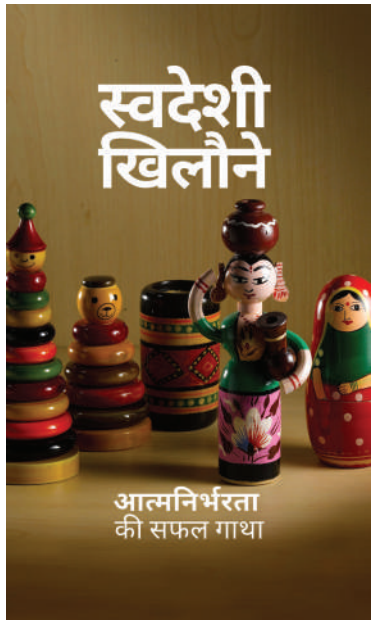

साथियो, क्लासरूम हो या खेल का मैदान, आज हमारे युवा हर क्षेत्र में देश को गौरवान्वित कर रहे हैं। इसी महीने पीवी सिंधु ने सिंगापुर ओपन का अपना पहला ख़िताब जीता है। नीरज चोपड़ा ने भी अपने बेहतरीन प्रदर्शन को जारी रखते हुए वर्ल्ड एथलेटिक्स चैंपियनशिप में देश के लिए सिल्वर मेडल जीता है। आयरलैंड पैरा बैडमिंटन इंटरनेशनल में भी हमारे खिलाड़ियों ने 11 पदक जीतकर देश का मान बढ़ाया है। रोम में हुए वर्ल्ड कैडेट रेसलिंग चैंपियनशिप में भी भारतीय खिलाड़ियों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। हमारे एथलीट सूरज ने तो ग्रीको-रोमन इवेंट में कमाल ही कर दिया। उन्होंने 32 साल के लम्बे अंतराल के बाद इस इवेंट में रेसलिंग का गोल्ड मेडल जीता है। खिलाड़ियों के लिए तो ये पूरा महीना ही एक्शन से भरपूर रहा है। चेन्नई में 44वें चेस ओलम्पियाड की मेज़बानी करना भी भारत के लिए बड़े ही सम्मान की बात है। 28 जुलाई को ही इस टूर्नामेंट का शुभारम्भ हुआ है और मुझे इसकी ओपनिंग सेरेमनी में शामिल होने का सौभाग्य मिला। उसी दिन यूके में कॉमनवेल्थ गेम्स की भी शुरुआत हुई। युवा जोश से भरा भारतीय दल वहाँ देश को रिप्रेजेंट कर रहा है। मैं सभी खिलाड़ियों और एथलीट को देशवासियों की ओर से शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे इस बात की भी ख़ुशी है कि भारत फ़ीफ़ा अंडर 17 महिला वर्ल्ड कप उसकी भी मेज़बानी करने जा रहा है। यह टूर्नामेंट अक्तूबर के आस-पास होगा, जो खेलों के प्रति देश की बेटियों का उत्साह बढ़ाएगा।

साथियो, कुछ दिन पहले ही देशभर में 10वीं और 12वीं कक्षा के परिणाम भी घोषित हुए हैं। मैं उन सभी स्टूडेंट्स को बधाई देता हूँ जिन्होंने अपने कठिन परिश्रम और लगन से सफलता अर्जित की है। महामारी के चलते पिछले दो साल बेहद चुनौतीपूर्ण रहे हैं। इन परिस्थितियों में भी हमारे युवाओं ने जिस साहस और संयम का परिचय दिया, वह अत्यंत सराहनीय है। मैं, सभी के सुनहरे भविष्य की कामना करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज हमने आज़ादी के 75 साल पर देश की यात्रा के साथ अपनी चर्चा शुरू की थी।

अगली बार, जब हम मिलेंगे तब हमारे अगले 25 साल की यात्रा भी शुरू हो चुकी होगी। अपने घर और अपनों के घर पर हमारा प्यारा तिरंगा फहरे, इसके लिए हम सबको जुटना है। आपने इस बार, स्वतंत्रता दिवस को कैसे मनाया, क्या कुछ खास किया, ये भी मुझसे ज़रूर साझा करिएगा। अगली बार, हम अपने इस अमृतपर्व के अलग-अलग रंगों पर फिर से बात करेंगे, तब तक के लिए मुझे आज्ञा दीजिए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

जनभागीदारी से जन महोत्सव:
आज़ाद भारत के 75 वर्षों का अमृत महोत्सव

“मित्रो, ‘आज़ादी का अमृत महोत्सव’ के सभी आयोजनों से एक सबसे बड़ा संदेश प्रसारित होता है कि हम सबको अपने कर्त्तव्य का निर्वाह पूर्ण निष्ठा के साथ करना चाहिए। इसीलिए यह अमृतकाल हमारे लिए आगामी 25 वर्षों का कर्त्तव्यकाल है, अर्थात् प्रत्येक देशवासी के लिए उसके कर्त्तव्य निर्वाह का समय।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी ने ‘मन की बात’ में ‘आज़ादी की रेलगाड़ी और स्टेशन’ आयोजन का ज़िक्र किया, यह हमारे लिए बड़ी उपलब्धि है। मैं पूरे रेलवे परिवार की ओर से प्रधानमंत्री का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने इस कार्यक्रम का नाम लिया और लोगों को ऐसे स्टेशनों पर एजुकेशनल विज़िट के लिए प्रोत्साहित किया।”

-विनय कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड

कस ली है कमर अब तो,
कुछ करके दिखाएँगे,
आज़ाद ही हो लेंगे,
या सर ही कटा देंगे।

यह पंक्तियाँ उस जज़्बे और संकल्प को बखूबी इंगित करती हैं, जिससे हमारे स्वतंत्रता सेनानी भारत की आज़ादी के लिए बहादुरी से लड़े थे। आज हम जब उस समय को याद करते हैं, जब लाखों लोग सदियों से आज़ादी के सूर्योदय की बाट जोह रहे थे, तो अहसास होता है कि 75 वर्षों की आज़ादी का यह अवसर कितना ऐतिहासिक और गौरवमय है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 12 मार्च, 2021 को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम में, भारत की तेजस्वी परम्परा, स्वतंत्रता संघर्ष के प्रेरणादाई इतिहास और स्वतंत्र भारत के उत्कृष्ट विकास को दर्शाने वाले ‘आज़ादी का अमृत महोत्सव’ का शुभारम्भ किया था। इस अवसर पर उन्होंने कहा, “आज़ादी का अमृत महोत्सव’ का अर्थ है स्वतंत्रता की अमृतसुधा। इसका अर्थ है स्वतंत्रता संघर्ष के योद्धाओं की प्रेरणाओं से मिलने वाला अमृत; नए विचारों और संकल्पों का अमृत और आत्मनिर्भरता की अमृतसुधा।” यह राष्ट्र के जागरण का उत्सव है - नए सवेरे का उदय और देश के प्रत्येक कोने, प्रत्येक समुदाय से लोगों को साथ लेकर आने का अवसर, ताकि वह आज़ादी के लिए किए गए

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ‘आज़ादी का अमृत महोत्सव’ का शुभारम्भ करते हुए।

सदियों लम्बे संघर्ष को याद कर सकें।

‘आज़ादी का अमृत महोत्सव’ जन भागीदारी द्वारा जन महोत्सव के मंत्र का आह्वान करता है। ‘आज़ादी का अमृत महोत्सव’ के उपलक्ष्य में सरकार ने देश के लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना जगाने के लिए 25,000 उत्सव और गतिविधियाँ आयोजित की हैं। इस यात्रा में न केवल राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों, विभिन्न मंत्रालयों और विभागों ने शिरकत की बल्कि पूरा देश हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित करने, भारत की सांस्कृतिक विविधता और विरासत का जश्न मानाने, और विभिन्न क्षेत्रों में भारत की उपलब्धियों की सराहना करने के लिए एक साथ आया। इस महोत्सव को जनांदोलन में बदलने के लिए गैर-सरकारी संस्थानों, कॉर्पोरेट्स, स्कूलों, कॉलेजों, धार्मिक संगठनों और युवाओं के असाधारण प्रयासों और सहभागिता ने असाधारण भूमिका निभाई है। इस जन भागीदारी महोत्सव ने न केवल हमारे देश के लोगों के बीच ज़िम्मेदारी, देशभक्ति और समर्पण की भावना को प्रबल किया, बल्कि सदियों से इस भूमि के लिए बलिदान देते आए यहाँ के सपूतों के योगदानों और बलिदानों के प्रति भी उन्हें जागृत किया है।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के चिह्न देश के चप्पे-चप्पे पर बिखरे मिलते हैं। इसके अंतर्गत, रेल मंत्रालय ने ‘आज़ादी की रेल गाड़ी और स्टेशन’ नामक एक बेहद रोचक शुरुआत की है। इसमें देश के 24 राज्यों में फैले 75 ‘स्वतंत्रता रेलवे स्टेशन’ और 27 ‘स्पॉटलाइट ट्रेनों’ की पहचान की गई और स्वतंत्रता अभियान

“प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पिंगलि वेंकय्या को भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के वास्तुकार की मान्यता देने वाले पहले प्रधानमंत्री हैं। अब तक सिर्फ़ हमारे दोस्त ही जानते थे कि पिंगलि वेंकय्या कौन हैं, अब हमें पूरा देश जानता है। यह हमारे परिवार के लिए बड़े सम्मान की बात है। मैं सभी को धन्यवाद देना चाहता हूँ।”

-गोपी कृष्ण
पिंगलि वेंकय्या के नाती

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' एक झलक में

भारत की आज़ादी के 75 साल पूरे होने का एक अखिल भारतीय उत्सव, 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' अभियान 'जनभागीदारी' सुनिश्चित करते हुए देश भर में 25,000 से अधिक सांस्कृतिक मेगा-कार्यक्रमों के संगठन के माध्यम से प्रकट किया जा रहा है। सभी आयोजनों को पाँच विषयों में बाँटा गया है- स्वतंत्रता संग्राम, आइडियाज़@75, एक्शन्स@75, अचीवमेंट्स@75, और रिज़ॉल्व@75। आइए कुछ आइकॉनिक कार्यक्रमों पर एक नज़र डालते हैं।

संविधान दिवस

जनभागीदारी को बड़े पैमाने पर सुनिश्चित करने के लिए संविधान दिवस 2021 समारोह का नेतृत्व भारत के माननीय राष्ट्रपति ने किया था, जहाँ लोगों को उनके साथ संविधान की प्रस्तावना को पढ़ने के लिए आमंत्रित किया गया।

जनजातीय गौरव दिवस

भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में 15 नवंबर, 2021 से एक सप्ताह तक चलने वाले उत्सव का आयोजन किया गया था जहाँ आदिवासी शिल्प, व्यंजन और विरासत की भव्यता को प्रदर्शित किया गया था।

राष्ट्रगान अभियान

एक अनूठी पहल जिसमें नागरिकों ने rastragaan.in वेबसाइट पर राष्ट्रगान गाते हुए वीडियो रिकॉर्ड किया जिसे संकलित कर स्वतंत्रता दिवस 2021 पर लाइव प्रसारित किया गया।

डिजिटल ज्योत

आज़ादी का अमृत महोत्सव के एक वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य पर डिजिटल ज्योत, एक स्काई बीम लाइट, की नई दिल्ली के सेंट्रल पार्क में स्थापना की गई। इसका उद्देश्य भारत के स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों को श्रद्धांजलि देना था।

काशी उत्सव

16 नवंबर, 2021 से वाराणसी में तीन दिवसीय उत्सव का आयोजन किया गया था जहाँ काशी की सदियों पुरानी विरासत, संस्कृति, शानदार इतिहास और सुंदरता का जश्न मनाया गया।

75 लाख पोस्टकार्ड अभियान

भारत को एक बेहतर राष्ट्र बनाने के लिए अपने विचारों और सुझावों को व्यक्त करते हुए देश भर के स्कूली छात्रों ने PM को पोस्टकार्ड लिखा।

के साथ उनके संबंधों को तलाश कर, हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के परिवारों के साथ एक सप्ताह लम्बे उत्सव का आयोजन किया गया।

जनभागीदारी की भावना को प्रबल करने हेतु सरकार ने देश के प्रत्येक ज़िले में जाकर और लोगों के बीच गौरव संचार के लिए 'राष्ट्रगान अभियान', 'यूनिटी इन क्रिएटिविटी', 'वन्दे भारतम् - नृत्य उत्सव' और रंगोली उत्सव 'उमंग' जैसे विभिन्न आयोजन किए हैं। भारत के 75वें स्वतंत्रता वर्ष के अवसर पर 'हर घर तिरंगा' नामक व्यापक अभियान भी देश भर में जारी है।

तिरंगा स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष की कहानी को बयान करता है और यह प्रत्येक भारतीय नागरिक का गौरव है। अभियान का लक्ष्य तिरंगे को हमारे राष्ट्रीय-ध्वज के रूप में पहचान दिलाने वाले लोगों के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। जिस तिरंगे को आज हम देखते हैं, उसकी नींव मैडम भीकाजी कामा और पिंगलि वेंकय्या ने रखी थी। इसके अलावा, तिरंगे को पूरी शान से फहराने के लिए असंख्य लोगों ने अपनी जानें कुर्बान कीं। इसलिए, 'हर घर तिरंगा' प्रत्येक भारतीय का अपना अभियान है।

अतः भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष का यह अवसर हमें हमारे स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा जलाई गई मशाल को फिर से प्रज्ज्वलित करने और उनके सपनों का भारत बनाने की प्रेरणा देता है। हमें अगले 25 वर्षों के लिए आधारभूमि तैयार करनी है और नए संकल्पों के साथ अमृतकाल की ओर आगे बढ़ना है, जो हमारा कर्त्तव्यकाल भी है। इसी तरह हम भारतीय स्वतंत्रता के सौ वर्षों का गौरव और उल्लास से स्वागत कर पाएँगे।

प्रधानमंत्री का आह्वान

"आपको भी समय निकालकर अपने पास के ऐसे ऐतिहासिक स्टेशन पर ज़रूर जाना चाहिए। आपको, स्वतंत्रता आंदोलन के ऐसे इतिहास के बारे में विस्तार से पता चलेगा जिनसे आप अनजान रहे हैं। मैं आसपास के स्कूल के विद्यार्थियों से आग्रह करूँगा, टीचर्स से आग्रह करूँगा कि अपने स्कूल के छोटे-छोटे बच्चों को ले करके ज़रूर स्टेशन पर जाएँ और पूरा घटनाक्रम उन बच्चों को सुनाएँ, समझाएँ।"

"मेरा एक सुझाव ये भी है, कि 2 अगस्त से 15 अगस्त तक, हम सभी, अपनी सोशल मीडिया प्रोफाइल पिक्चर्स में तिरंगा लगा सकते हैं।"

मातृभूमि भारत को प्रणाम

पद्मभूषण पंडित अजय चक्रवर्ती
शास्त्रीय संगीत गायक

1947 में हमारी मातृभूमि की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, उसने राष्ट्रीय एकता और अपनी अनूठी पहचान के संबंध में कई उपलब्धियाँ हासिल की हैं। तकनीकी प्रगति, दुनिया भर में उसके डिजिटल फुटप्रिंट की पहुँच और साथ ही हज़ारों वर्षों पुरानी उसकी सांस्कृतिक विरासत को व्यापक पहचान मिली है, जिसमें उसकी आध्यात्मिक धरोहर, योग परम्परा, विरासत, कला, साहित्य और संगीत शामिल है। इनमें से मैं तीन उन क्षेत्रों पर बात करना चाहता हूँ, जिनका आपस में गहरा जुड़ाव है - अध्यात्म, योग और संगीत। मेरा पक्का विश्वास है कि यदि हम इन पर बल देंगे तो देश तेज़ी से तरक्की करेगा। हमारे बच्चे जब इनकी दिशा में आगे बढ़ते हैं, तो यह क्षेत्र उन्हें अनोखे पथ का पथिक बना देते हैं। ऐसा इसलिए कि अन्य बातों के साथ-साथ, इनमें हमारी पूर्ण भारतीयता समाहित है।

मेरे लिए भारतीयता हमारे प्रेम, विश्वास, निष्ठा, बलिदान जैसे तत्वों में समाहित है। मातृभूमि के लिए प्रेम, उसमें गहरा विश्वास और भरोसा, उसके प्रति निष्ठा और उसके लिए बलिदान देने को तैयार रहने का जज़्बा - यह केंद्रीकृत मूल्य ही हमारी एकता और अखंडता को मज़बूत करते हैं और भारत के अनोखे अस्तित्व को पुनः व्याख्यायित करते हैं। अपने जीवन में हमारा सीखा-सिखाया इन्हीं मूल्यों पर आधारित रहता है। इनमें पाँचवाँ मूल्य भी जोड़ लेना चाहिए, जो है, हमारी प्रज्ञा, परम्परा और हमारे अभिभावकों तथा स्नेहीजनों के शब्दों की स्वीकार्यता का यानी बिना किसी संदेह या सवालों के स्वीकारना। इसमें स्नेह, भरोसा, श्रद्धा और बलिदान के प्रति इच्छा की भी ज़रूरत पड़ती है।

संगीत हो, योग या अध्यात्म, वही मूल्य यहाँ भी काम करते हैं। और यह तभी सम्भव होता है जब हम अपने आप से जुड़ जाते हैं। अपने जीवन में मैंने जाना है कि हमारी माता या मातृभूमि की तरह, संगीत में भी उपरोक्त चारों गुणों की ज़रूरत होती है। मैं इसके

प्रति भी पूर्णतः आश्वस्त हूँ कि योग और अध्यात्म के गहन अनुभवों के लिए भी आवश्यकता यही है। इसके अलावा, तीनों एक-दूसरे से जुड़े भी हैं! योग की ही तरह, संगीत में श्वास पर काबू और नियमन की ज़रूरत होती है। भारतीय संगीतज्ञों का लौकिक जीवन दुनिया में सबसे लम्बा होता है। संगीत के ज़रिए ही व्यक्ति सृष्टि के स्रोत तत्व, ध्वनि की खोज पर निकलता है। संगीत और योग हमारी एकाग्रता को बढ़ाने का काम करते हैं, जिसकी आज भौतिकवादी विकर्षणों से जूझते समय बहुत ज़रूरत है। साथ ही, संगीत को गहन आध्यात्मिक अनुभव से अलग नहीं रखा जा सकता। सच तो यह है कि योग और अध्यात्म का सबसे सरल मार्ग सम्भवतः संगीत से ही जाता है। अंत में, मैं संस्कृत की अपनी समृद्ध धरोहर पर कुछ कहना चाहता हूँ। यह भाषा केवल हमारे मूल्यों की वाहक नहीं होती, यह भाषा ऐसी है जो वैज्ञानिक रूप से वाचन को साफ़ और स्पष्ट रूप देती है।

भारतीयों के ये मूल्य और परम्पराएँ अनोखी हैं और सम्भवतः किसी अन्य देश में नहीं मिलतीं। यह हमें अनोखा अस्तित्व प्रदान करते हुए भविष्य की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

आज हम 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के ज़रिए भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्षों का जश्न मना रहे हैं और हमारे दूरदर्शी एवं ओजस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने, इसके माध्यम से हमें आज़ादी दिलाने और उसकी रक्षा करने के लिए खुद को न्योछावर करने वाले महान देशभक्तों और सिपाहियों के प्रति राष्ट्र के गहरे स्नेह, विश्वास और निष्ठा को व्यक्त किया है। अपनी मातृभूमि भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने पर मैं खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।

इन कुछ शब्दों के साथ मैं अपनी मातृभूमि के आर्थिक, वित्तीय, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए अपनी प्रार्थना प्रेषित करता हूँ।

जय हिन्द, जय भारत।

ॐ सह नाववतु।
सह नौ भुनक्तु।
सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

बदलाव की ओर अग्रसर भारत

डॉ. एस एल भैरप्पा
उपन्यासकार, दार्शनिक और पटकथा लेखक

मेरा जन्म 1931 में हुआ और जब भारत को स्वतंत्रता मिली तब मैं सोलह साल का था। स्वाधीनता से पूर्व मुझे भारतीय देहाती जीवन का व्यापक अनुभव है और मैं कह सकता हूँ कि श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इसमें बहुत सकारात्मक बदलाव आया है। मुझे बहुत पुरानी एक बात याद आती है जब दो महिला अधिकारी दिल्ली से अहमदाबाद की यात्रा कर रहीं थी। रेलगाड़ी पूरी तरह से भरी हुई थी और उन दोनों के पास रिज़र्वेशन नहीं था। उन्होंने टिकट चेकर से मदद माँगी लेकिन बताया गया कि रेलगाड़ी में कोई सीट खाली नहीं है। इसी कोच में एक युवा लड़का अपने दोस्त के साथ सफ़र कर रहा था, उसने अपनी सीट उन दोनों महिला अधिकारियों को दे दी और ख़ुद सारी रात डिब्बे के फर्श पर सोते हुए यात्रा की। बहुत बाद में जब नरेन्द्र मोदी ने पद ग्रहण करते समय संसद भवन के सामने अपना सर झुकाया और कहा कि मैं प्रधानमंत्री नहीं बल्कि प्रधान सेवक हूँ, तब उन दोनों महिला अधिकारियों ने तुरंत पहचान लिया कि यह वही व्यक्ति है जिसने बरसों पहले उन्हें रेलगाड़ी में सीट दी थी। हमारे प्रधानमंत्री इस तरह के व्यक्ति हैं और वे देश में अनेक बदलाव ला रहे हैं।

इन 75 वर्षों में, हमारा देश बहुत बदला है लेकिन प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में यह बदलाव बहुत तेज़ी से हो रहा है। पहले गाँवों में शौचालय नहीं होते थे और स्त्री-पुरुष खुले में शौच करते थे। अब लड़कियाँ उन घरों में शादी करने से इंकार कर देती हैं जिन घरों में शौचालय नहीं होता। विद्यालयों में लड़कियाँ साफ़ और स्वच्छ शौचालयों की माँग करने लगी हैं। यही नहीं अब हर ग्रामीण का अपना बैंक खाता है। जब कभी सरकार कोई मुआवज़ा देती है तो वह उस व्यक्ति के खाते में सीधा पहुँचता है। इस तरह बिचौलियों की दलाली पूरी तरह समाप्त कर दी गई है। कितने ही कस्बे और शहर पहले की तुलना में अधिक स्वच्छ हो गए हैं और हमने आर्थिक तौर पर भी उन्नति की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में महिलाओं का अधिक विकास हुआ है। वे अब सेना में जवान और फाइटर पायलट बन रही हैं। बड़ी संख्या में महिलाएँ न्यायाधीश बन रही हैं। तीन तलाक की प्रथा खत्म कर दी गई है। भारतीय समाज के हर तबके में सुधार दिख रहा है।

हम आत्मनिर्भर हो चुके हैं। मध्य पूर्व सहित कई देशों के साथ भारत के कूटनीतिक संबंध विकसित हो चुके हैं। प्रधानमंत्री मोदी उदारता के दर्शन के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। वे देश के सांस्कृतिक राजदूत हैं। धारा 370 को हटाना हो या वैश्विक स्तर पर योग दिवस मनाना हो या स्टार्ट-अप कार्यक्रम को बढ़ावा देना हो, ये सारे ऐतिहासिक निर्णय उनके सफल नेतृत्व को दर्शाते हैं। पिछले सप्ताह हमने देखा कि हमारे खिलाड़ियों ने 2022 के कॉमनवेल्थ खेलों में अनेक पदक प्राप्त किए। सरकार ने देश में खेल संस्कृति के स्तर को बढ़ाया है। इससे यह पता चलता है कि नरेन्द्र मोदी किसी एक क्षेत्र में नहीं, बल्कि लगभग सारे क्षेत्रों का विकास करने में सक्षम हुए हैं।

'हर घर तिरंगा' का विचार अति उत्तम है। यह कितना सुंदर है कि लोगों के घरों में तीन दिन तक तिरंगा फहरेगा। विश्व समुदाय में भारत के सम्मान को देश के नागरिक महसूस करने लगे हैं। अगर हम स्वाधीनता संग्राम की बात करें तो मेरा मानना है कि हमें सिर्फ़ अहिंसा से आज़ादी नहीं मिली। हमारे जवानों के विद्रोह से ब्रिटिश राज को पता चल गया कि वे अब भारत पर लगातार शासन नहीं कर सकते इसलिए हमें यह समझना ज़रूरी है कि भले ही अहिंसा का सिद्धांत सामाजिक, राजनीतिक और राष्ट्रीय जीवन के लिए महत्वपूर्ण है लेकिन हमें वैश्विक स्तर पर मज़बूत भी होना होगा। इस मज़बूती को प्राप्त करने के लिए हमें औद्योगिक प्रगति करनी होगी क्योंकि अगर ऐसा नहीं हुआ तो हमारी सेना भी सशक्त नहीं हो सकती। इन अर्थों में भी प्रधानमंत्री मोदी बदलाव लाने में सफल हुए हैं। अहिंसा अंग्रेज़ों से लड़ने का एक उपाय था और इसके साथ अन्य कई उपाय भी अपनाए जा रहे थे। विकास के बारे में सोचते हुए हमें व्यावहारिक होना चाहिए और हमें आधुनिक बनने का प्रयास करना चाहिए।

शिक्षा में सुधार के लिए हुनर, मानवता और सार्वभौमिक नैतिकता अनिवार्य है और राष्ट्र के विकास के लिए ज़रूरी है। हमें लगातार उन्नति करनी है तो 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मनाते समय हमें याद रखना होगा कि हम क्या थे और पिछले 75 वर्षों में हमारी क्या उपलब्धि रही और हम क्या बनने जा रहे हैं। हमें आर्थिक क्षेत्र में विकास करना है तो हमारी आदतें बदलनी चाहिए और दार्शनिक रूप से उदारता को अपनाना चाहिए। धर्म के प्रति एक वैज्ञानिक सोच रखनी चाहिए। नए भारत के लिए ये सभी चीजें महत्वपूर्ण हैं और इसके लिए एक सशक्त नेतृत्व की ज़रूरत है।

अश्विनी वैष्णव

केंद्रीय रेल, संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री

विकास की पटरी पर गतिमान भारतीय रेलवे

"भारत 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मना रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस 75वें आज़ादी वर्ष में एक नया संकल्प दिया है कि आने वाले 25 वर्षों में भारत की क्या परिकल्पना होनी चाहिए और देश का निर्माण करने के लिए क्या-क्या प्रयास करने पड़ेंगे। इसके लिए हम सब को मिलकर प्रयास करना पड़ेगा।

रेलवे में भी कई नए प्रयास किए जा रहे हैं। पैसंजर एक्सपीरियंस में पूरी तरह से एक ट्रांसफ़ॉर्मेशनल चेंज लाया जाएगा, नई तरह की ट्रेन–वंदे भारत की नई जेनेरशन ट्रेंस, एनर्जी एफ़ीशिएंट ट्रेन जिसमें पैसेंजर्स को बहुत अच्छी सुविधाएँ मिलें, रीजनल मेट्रो, फ्रीट के लिए EMU ट्रेंस–हर तरह रेलवे में एक नई तरह की सोच से काम किया जाएगा।

कम-से-कम 75 स्टेशन का पुनर्निर्माण का काम शुरू हो चुका है। रेलवे में काम-काज के तरीके को भी बदला जा रहा है। बुलेट ट्रेन के प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाने की तैयारी हो रही है, यहाँ तक कि 8 नदियों पर पुल का निर्माण हो रहा है। इसी तरह से हर क्षेत्र में डेडिकेटेड फ्रीट कॉरिडोर हो, कवच हो, बुलेट हो, नई वंदे भारत हो, नए स्टेशन हों, इन सभी के साथ रेलवे की कायाकल्प की तैयारी हो रही है।"

आज़ादी की रेलगाड़ी और स्टेशन

"इस आयोजन के पीछे हमारी यह सोच थी कि भारत के रेलवे स्टेशन एवं विभिन्न रेलगाड़ियों का योगदान भारत के स्वतंत्रता संग्राम में जो रहा है उसको जनमानस तक अच्छी तरह से पहुँचाया जाए और इसलिए रेल मंत्रालय के आइकॉनिक वीक समारोह का नाम 'आज़ादी की रेलगाड़ी और स्टेशन' रखा गया।

इसमें देश भर के स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े 75 स्टेशन और 27 स्पॉटलाइट रेलगाड़ियों को चिह्नित किया गया जो की पूरे सप्ताह जनमानस के आकर्षण का केंद्र बने रहे। सभी 75 स्टेशनों की सजावट के साथ-साथ वहाँ पर देशभक्ति के गीतों का प्रसारण, लाइट और साउंड शो, देशभक्ति से जुड़े नुक्कड़ नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम, स्वतंत्रता सेनानियों का इतिहास, फोटो प्रदर्शनी, व बाइक, साइकिल और तिरंगा रैली जैसे अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया। लगभग 200 स्वतंत्रता सेनानियों और उनके परिवारों को भी सम्मानित किया गया और उनके साथ संवाद सत्र आयोजित किए गए।

विनय कुमार त्रिपाठी, अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड"

काकोरी रेलवे स्टेशन, उत्तर प्रदेश:

यह स्टेशन 1925 के काकोरी ट्रेन डकैती के कारण मशहूर हुआ जिसमे राम प्रसाद बिस्मिल और अशफ़ाक़ुल्लाह खां जैसे बहादुरों ने ट्रेन से ले जाए जा रहे अंग्रेज़ी ख़ज़ाने को लूटकर अंग्रेजों को अपनी ताकत दिखाई।

गोमो जंक्शन, झारखंड:

वर्तमान में नेताजी सुभाष चंद्र बोस जंक्शन गोमो के नाम से जाना जाने वाला यह वही स्टेशन है जहाँ से कालका मेल पर सवार होकर नेताजी सुभाष ब्रिटिश अधिकारियों को चकमा देने में सफल हुए थे।

वांची मनियाच्चि जंक्शन, तमिलनाड़:

इस स्टेशन का नाम राज्य के तूतुकुड़ी ज़िले में तमिल स्वतंत्रता सेनानी वंचीनाथन को समर्पित किया गया है। यहाँ 25 वर्षीय वांची ने एक ब्रिटिश कलेक्टर को उसके दुष्कार्यों के लिए दण्डित किया था।

आज़ादी की रेलगाड़ी और स्टेशन के बारे में अधिक जानने के लिए QR Code स्कैन करें

पिंगलि वेंकय्या - भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के वास्तुकार

आज जब भारत 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' और 'हर घर तिरंगा' अभियान मना रहा है, हर भारतवासी के लिए राष्ट्र ध्वज का महत्व कई गुना बढ़ गया है। भारत के लिए उसका राष्ट्रीय ध्वज उसके मूल्यों और विचारों का प्रतिनिधित्व करता है। 2 अगस्त, 1876 में जन्में पिंगलि वेंकय्या एक स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने भारत को यह विशिष्ट पहचान दी।

हमारी दूरदर्शन टीम ने उनके नातियों और नातिन ***गोपी कृष्णा, जी वी नरसिम्हा,*** *और* ***पिंगल सुशीला दशरथ*** *से खास बातचीत की।*

"पिंगलि वेंकय्या मेरे नाना थे। मैं केवल 3 साल का था जब उनका निधन हो गया। आज़ादी के 75 सालों में किसी भी नेता ने मेरे नाना जी के योगदान को मान्यता नहीं दी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पिंगलि वेंकय्या को भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के वास्तुकार की मान्यता देने वाले पहले प्रधानमंत्री हैं। अब तक सिर्फ़ हमारे दोस्त ही जानते थे कि पिंगलि वेंकय्या कौन हैं, अब पूरा देश जानता है। और इस बार 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' पर पिंगलि वेंकय्या को याद करना हमारे लिए खुशी की बात है। पहले पाठ्यपुस्तकों में उनके नाम का ज़िक्र होता था लेकिन बाद में इसे हटा दिया गया। आने वाली पीढ़ियों को अपने इतिहास के बारे में पता होना चाहिए। अगर हम अपना इतिहास जान लेंगे तभी हम आगे बढ़ सकते हैं। मेरी जानकारी के अनुसार झंडा कभी नहीं

बदलता और जब तक तिरंगा रहेगा, भारत रहेगा, मेरे नाना पिंगलि जी का नाम रहेगा और मेरे परिवार का नाम रहेगा। मैं अपनी खुशी को शब्दों में बयाँ नहीं कर सकता। केवल मैं ही नहीं बल्कि हमारा पूरा परिवार, सरकार, मोदी जी और किशन रेड्डी जी के बहुत आभारी हैं," गोपी कृष्णा ने कहा।

जी वी नरसिम्हा कहते हैं, "'आज़ादी का अमृत महोत्सव' नरेन्द्र मोदी का ब्रेनचाइल्ड है और उन्होंने सही समय पर पिंगलि वेंकय्या के बारे में बात की। 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' का मुख्य उद्देश्य युवाओं, हमारी पीढ़ी और आने वाली पीढ़ियों में देशभक्ति की भावना जगाना है। इसी तरह, हमारे प्रिय प्रधानमंत्री ने भी 'हर घर तिरंगा' मनाने की योजना बनाई है - जो अद्भुत है। मैं अपने नाना जी श्री पिंगलि वेंकय्या की 146वीं जयंती आयोजित करने के लिए सरकार को धन्यवाद देता हूँ।

पिंगल सुशीला दशरथ ने भी आभार व्यक्त करते हुए कहा, "मैं बहुत खुश हूँ। यह हमारे लिए एक महान क्षण है और सभी भारतीयों के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। जय हिन्द!"

भारतीय ध्वज का उद्भव

भारतीय राष्ट्रीय ध्वज भारत के लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है। जिस प्रकार हमारी स्वतंत्रता की लड़ाई विभिन्न चरणों से गुज़री उसी प्रकार अपने वर्तमान स्वरुप में अपनाए जाने से पहले हमारे राष्ट्रीय ध्वज में कई चरणों पर बदलाव आए।

1906 में, कोलकाता (कलकत्ता) के पारसी बागान स्क्वायर में पहली बार भारत का झंडा फहराया गया था।

1907 में, एक समाजवादी सम्मेलन में बर्लिन में पैरिस में मैडम भीकाजी कामा द्वारा मामूली संशोधनों के साथ एक समान ध्वज उठाया गया था।

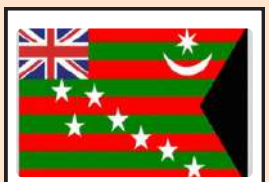

1917 में, एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक ने एक और झंडा फहराया जो औपनिवेशिक साम्राज्य के भीतर भारतीयों के लिए स्वायत्त शासन का प्रतीक था।

1921 में, पिंगलि वेंकैया ने महात्मा गांधी को ध्वज का एक डिज़ाइन प्रस्तुत किया। ध्वज में तीन धारियां और केंद्र में एक चरखा था।

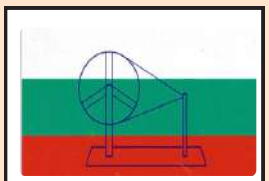

आखिर में, जुलाई 1947 में, पिंगलि वेंकय्या के ध्वज को औपचारिक रूप से कुछ संशोधनों के साथ स्वतंत्र भारत के ध्वज के रूप में अपनाया गया। केसर साहस के लिए, सफ़ेद शांति के लिए और हरा उर्वरता और विकास के लिए था। केंद्र में गहरा नीला चक्र सत्य और जीवन के प्रतीक धर्म चक्र का प्रतिनिधित्व करता है। यही झंडा तिरंगे के रूप में जाना जाता है।

भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी ऊ तिरोत सिंग

संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) के पूर्व अध्यक्ष, **प्रोफ़ेसर डेविड सिम्लिह** ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार जताया कि उन्होंने अपने 'मन की बात' सम्बोधन के दौरान मेघालय के स्वतंत्रता सेनानी के योगदान को याद किया। उन्होंने कहा कि ऊ तिरोत सिंग की कहानी और अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ उनके संघर्ष को पूरे देश को जानना चाहिए और प्रधानमंत्री द्वारा तिरोत सिंग का उल्लेख इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने बताया कि ऊ तिरोत सिंग अधिकारों और न्याय के लिए संघर्ष की एक मिसाल बन चुके हैं जिसका प्रभाव आज भी कायम है। यूपीएससी के पूर्व अध्यक्ष ने कहा कि पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बहुत बड़ा योगदान दिया है।

तिरोत सिंग की कहानी जानने के लिए QR code स्कैन करें

अमृता भारती कन्नडार्थी

भारतवर्ष में आज़ादी के 75 सालों का जश्न मनाया जा रहा है और हर प्रांत, हर शहर, हर गाँव इस जश्न में शामिल है। अमृत महोत्सव की बात करते हुए कर्नाटक के **मुख्यमंत्री बसावराज बोम्मई** ने कहा, "किसी भी इंसान के लिए 75 साल का होना मतलब बुज़ुर्ग होना लेकिन एक देश के लिए यह एक नवनीत वर्ष है।" इसी उत्साह के साथ, 8 मई, 2022 से कर्नाटक सरकार ने अमृता भारती कन्नडार्थी कार्यक्रम का आयोजन किया था। पूरे राज्य में हज़ारों की संख्या में इसमें लोग भाग लेने जुटे। अमृता भारती कन्नडार्थी में कर्नाटक की संस्कृति का शानदार प्रदर्शन किया गया। सरकार ने विशेष बजट के तहत इस कार्यक्रम की शुरुआत की जो 15 अगस्त, स्वतंत्रता दिवस, तक चला। इस कार्यक्रम में छात्रों से लेकर पुलिस विभाग के कर्मचारियों तक सब ने भाग लिया।

विख्यात कन्नड़ साहित्यकार, **डोड्डा रेंज गौड़ा** का कहना है, "अमृता भारती कन्नडार्थी अद्भुत पहल है। कई साल पहले होना चाहिए था। यह भारत का इतिहास 5,000 वर्ष से भी ज़्यादा पुराना है और भारत की एक अखंड परम्परा है जो आज हम मना रहे हैं।"

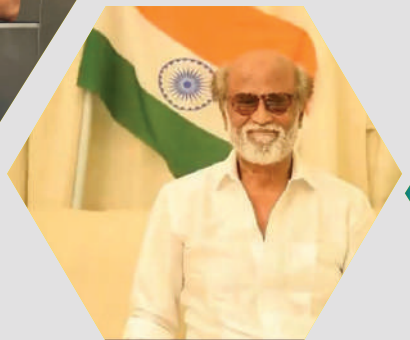

हर घर तिरंगा

आज़ादी के 75वें वर्ष को चिह्नित करने के लिए 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत भारत सरकार ने 'हर घर तिरंगा' अभियान द्वारा लोगों को तिरंगा घर लाने और फहराने के लिए प्रोत्साहित किया। इस पहल के पीछे लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना जगाना और भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना है।

इस महत्वपूर्ण अवसर का जश्न मनाने के लिए, नागरिकों को 13 से 15 अगस्त, 2022 तक अपने घरों में झंडा फहराने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसके अलावा, www.harghartiranga.com पर देशवासी वर्चुअल रूप से अपने घरों से ध्वज 'पिन' भी कर सकते हैं और साथ ही 'सेल्फी विद फ्लैग' भी ले सकते हैं।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत 20 करोड़ ध्वज की बिक्री हुई और लोगों द्वारा 5 करोड़ सेल्फी ली गईं!

हर घर तिरंगा एंथम देखने के लिए QR Code स्कैन करें

सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए पारम्परिक सौगात : आयुष

“लोगों के समग्र स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती रुचि का लाभ सबको मिल रहा है। हम सब जानते हैं कि भारतीय पारम्परिक तरीके, इसमें कितने उपयोगी सिद्ध हुए हैं। कोरोना से निपटने में वैश्विक-स्तर पर आयुष ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

सर्वे भवन्तु सुखिनः।
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।
मा कश्चित् दुःख भाग भवेत्॥

यह वैदिक श्लोक सभी के लिए प्रसन्नता, स्वास्थ्य और सम्पन्नता की कामना करता है। प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति भी इसी मूल्य को लेकर चलती है। इस विशद ज्ञान को पुनर्जीवित करने की दृष्टि से 2014 में भारत सरकार ने आयुष मंत्रालय का गठन किया। इसके अंतर्गत आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होमियोपैथी को लाया गया। हालाँकि सरकार तभी से स्वास्थ्य सेवा में आयुष पद्धति को बढ़ावा देने और उसके विकास के लिए लगातार काम कर रही थी, पर कोविड-19 महामारी के दौरान पूरी दुनिया में इसका महत्व उजागर हुआ।

कोविड के दुष्प्रभाव से लड़ने के लिए आयुष मंत्रालय ने नियमित तौर पर दिशानिर्देश जारी किए जिसमें घर पर रहते हुए ही इस बीमारी से रोगी स्वयं कैसे लड़े और अपनी देखभाल कैसे करे, इस पर ध्यान केंद्रित किया गया। इसके तहत आयुष 64 के वितरण का देशव्यापी अभियान चलाया गया। आयुष 64 जड़ी-बूटियों से बनी ऐसी दवा है जिसे केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान

“अश्वगंधा, च्यवनप्राश, गिलोय आदि जैसे आयुष उत्पादों के निर्यात में 33% की वृद्धि देखी गई है जो कोविड-19 से पहले सिर्फ 5% थी। यह प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में किए गए सरकार के अनेक प्रयासों के कारण सम्भव हुआ है।”

-डॉ. तनुजा नेसरी
निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान

अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस) ने विकसित किया है। यह दवा लक्षण रहित, हल्के लक्षण वाले और कम लक्षण वाले कोविड संक्रमण से निपटने में सहायक उपचार के तौर पर कार्य करती है। कोविड की चुनौतियों से लड़ने में आयुष आधारित परामर्श देने के लिए एक हेल्पलाइन भी शुरू की गई। मंत्रालय ने डब्लूएचओ m-YOGA ऐप और Y-BREAK ऐप भी जारी किए जो सामान्य योगा प्रोटोकॉल पर आधारित थे।

इन सारे कदमों का उद्देश्य समग्र स्वास्थ्य की अवधारणा को सामने लाना था, ताकि रोगियों का न केवल शारीरिक लक्षणों का उपचार हो बल्कि प्रत्येक के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक उन्नति भी इसमें शामिल हो। यह समग्रता आयुष द्वारा कोविड के उपचार के साथ एक स्वस्थ जीवनचर्या पर ज़ोर देती है।

दुनिया इस बीमारी से लगातार लड़ रही है और इसमें भारत के चिकित्सा ज्ञान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिल रही है। स्वास्थ्य देखरेख में पारम्परिक औषधि एक मुख्य स्तम्भ की तरह उभरी है और स्वस्थ रहने में यह पद्धति महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हाल के वर्षों में पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रयोग से बड़ा बदलाव आया है। नई तकनीकों के कारण इन चिकित्सा पद्धतियों को जानना और उपयोग में लाना भी आसान हो गया है।

गुजरात में वैश्विक आयुष निवेश और नवाचार शिखर सम्मेलन का दौरा करते हुए प्रधानमंत्री

"शुरुआत में हमें प्रत्येक दिन पोर्टल पर 10,000 हिट मिलते थे, लेकिन प्रधानमंत्री द्वारा 'मन की बात' में 'इंडियन वर्चुअल हर्बेरियम' का उल्लेख करने के बाद प्रतिदिन हिट 15,000 हो गए हैं। साथ ही, आज हमने कई देशों से लगभग 2 लाख हिट रिकॉर्ड किए हैं।"

-डॉ. ए ए माओ
निदेशक, बीएसआई

आयुष मंत्रालय अपने अंतरराष्ट्रीय प्रकोष्ठ के माध्यम से विश्व-स्तर पर पारम्परिक प्रणालियों को बढ़ावा देने में जुटा हुआ है। डब्ल्यूएचओ ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन को इस साल अप्रैल में गुजरात में पारम्परिक चिकित्सा के डेटा, नवाचार और स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करने के उद्देश्य से लॉन्च किया गया था। इसके अलावा, आयुर्वेद/आयुष अस्पतालों, शैक्षणिक संस्थानों, फैलोशिप और हर्बल उद्यानों की स्थापना के लिए 50 से अधिक देशों के साथ सहयोग भी किया जा रहा है ताकि भारत के पारम्परिक चिकित्सा ज्ञान को दुनिया तक पहुँचाया जा सके।

इन सभी निरंतर और अनगिनत प्रयासों के कारण थोड़े समय में ही बड़े पैमाने पर आयुष का वैश्विक बाज़ार बन खड़ा हुआ है। वित्त वर्ष 2022 में इस उद्योग के 23.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने का अनुमान है। विभिन्न आयुष धाराओं का बाज़ार 2014-2020 में 17 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 18.2 बिलियन अमरीकी डॉलर को पार कर गया है। आयुष मंत्रालय, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के साथ, आयुष निर्यात संवर्धन परिषद की स्थापना कर रहा है, ताकि आयुष निर्यात को और अधिक सुविधाजनक बनाया जा सके और उसे प्रोत्साहन दिया जा सके।

अप्रैल में, आयुष मंत्रालय ने गुजरात में ग्लोबल आयुष इंवेस्टमेंट एंड इनोवेशन समिट का आयोजन किया, ताकि इस क्षेत्र में निवेश की सम्भावनाएँ तलाश की जा सके। गौरतलब है कि आयोजन के दौरान करीब दस हज़ार करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए थे।

साथ ही, आयुष के क्षेत्र में स्टार्ट-अप्स को दिए गए प्रोत्साहन गेम-चेंजर साबित हुए हैं। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान में एक इनक्यूबेशन और इनोवेशन सेंटर की स्थापना और 'आयुष स्टार्ट-अप चैलेंज' के आयोजन जैसे कदमों ने कई नवोदित उद्यमियों को 'वोकल फॉर लोकल' बनकर ग्लोबल चैम्पियन बनने का अवसर दिया है।

देश में पारम्परिक चिकित्सा के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण पहल की गई है। संरक्षित पौधों या पौधों के हिस्सों की डिजिटल छवियों का एक दिलचस्प संग्रह 'इंडियन वर्चुअल हर्बेरियम' लॉन्च किया गया है। प्रधानमंत्री ने अपने हालिया 'मन की बात' सम्बोधन में इस संग्रह को लेकर कहा, "यह इस बात का भी उदाहरण है कि हम अपनी जड़ों से जुड़ने के लिए डिजिटल दुनिया का उपयोग कैसे कर सकते हैं।" भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण (बीएसआई) के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित यह संग्रह इंटरनेट पर मुफ़्त देखा जा सकता है।

भारतीय चिकित्सा पद्धति में निहित शक्ति और इसके साथ भारत सरकार की इसे बढ़ावा देने की इच्छा और दूरदृष्टि से यह पद्धति निश्चित तौर पर आगे बढ़ती जाएगी और न केवल देश बल्कि सम्पूर्ण विश्व की सोच को बदल कर रख देगी।

समग्र चिकित्सा पद्धति के विषय में और जानने के लिए QR Code स्कैन करें

इंडियन वर्चुअल हर्बेरियम: भारत को अपनी जड़ों से जोड़ता

1. 1 जुलाई को केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने देश के सबसे बड़े ऑनलाइन हर्बेरियम डेटाबेस, 'इंडियन वर्चुअल हर्बेरियम' का उद्घाटन किया
2. 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' और 'डिजिटल इंडिया' के ढांचे के तहत भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण द्वारा विकसित
3. इसका उद्देश्य भारत और अन्य देशों के हर्बेरियम नमूनों पर समग्र जानकारी प्रदान करता है
4. यह अनुसंधान अध्ययनों में भी सहायता करेगा और वैश्विक पौधों के अनुसंधान के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा
5. पोर्टल में हर्बेरियम नमूनों की लगभग एक लाख छवियां शामिल हैं

इंडियन वर्चुअल हर्बेरियम : देश के वनस्पतियों का सबसे बड़ा डेटाबेस

भारतीय वानस्पतिक सर्वेक्षण (बीएसआई) के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित, इंडियन वर्चुअल हर्बेरियम में स्पेसिमिन्स की एक लाख से भी अधिक छवियाँ मौजूद हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने हालिया 'मन की बात' सम्बोधन में इंडियन वर्चुअल हर्बेरियम का ज़िक्र एक उदाहरण के रूप में किया कि कैसे डिजिटल उपकरण हमें हमारी जड़ों से जुड़ने में मदद करते हैं।

हमारी दूरदर्शन टीम ने इस नई पहल के बारे में जानने के लिए बीएसआई के निदेशक ***डॉ. ए ए माओ*** *से बात की।*

"हमारे पास हमेशा भारतीय वनस्पतियों का इतना समृद्ध संसाधन बैंक था। परंतु, ज़्यादातर लोग इससे अनजान थे। अब जब हम एक डिजिटल माध्यम का इस्तेमाल कर रहे हैं, तो हम भारतीय वनस्पतियों के प्रति दुनिया भर का आकर्षण देख सकते हैं। हमारा लक्ष्य है कि इस वर्ष के अंत तक डिजिटल प्रजातियों की संख्या बढ़कर दो लाख हो जाए।

बदलती जैव विविधता और जलवायु परिस्थितियों में इसका महत्व बहुत अधिक हो जाता है। हर्बेरियम में 200-300 साल पुराने नमूनों का संग्रह है, जिनका उपयोग इन परिवर्तनों और उनके प्रभावों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करने के लिए किया जा सकता है। यह ज्ञात आयुर्वेदिक/औषधीय पौधों के प्रमाणीकरण के लिए सबसे अच्छे संसाधनों में से एक है। छात्रों, शोधकर्ताओं, और अन्य इच्छुक लोगों के लिए वेब पोर्टल एक बहुत ही लाभदायक और ज्ञानवर्धक स्रोत है।"

'मन की बात' में हर्बेरियम के उल्लेख के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, "शुरुआत में हमें हर दिन पोर्टल पर 10,000 हिट्स मिलते थे, जिसकी संख्या अब 15,000 हो गई है।" इंडियन वर्चुअल हर्बेरियम को ivh.bsi.gov.in पर एक्सेस किया जा सकता है।

आयुष- समग्र स्वास्थ्य सेवा का लक्ष्य

कोविड-19 और अन्य संक्रमणों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए भारतीय पारम्परिक चिकित्सा उपचार दुनिया भर में बड़े पैमाने पर प्रशंसा और स्वीकृति प्राप्त कर रहा है।

इसी दिशा में आयुष मंत्रालय की विभिन्न धाराओं में की गई सभी पहलों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए, हमारी दूरदर्शन टीम ने अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान के निदेशक ***डॉ. तनुजा नेसरी*** *के ख़ास बातचीत की।*

कोविड-19 के दौरान आयुर्वेदिक उपचारों के व्यापक उपयोग के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, "यह गलत नहीं होगा यदि हम आयुर्वेदिक दवाओं को कोविड के साथ भी, कोविड के बाद भी लोगों की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए मददगार मानते हैं। हमने 'मेरा स्वास्थ्य, मेरी ज़िम्मेदारी' नामक एक अभियान भी शुरू किया, जिसमें कई निवारक चिकित्सा शामिल थे। हमने काढ़ा आदि का उपयोग करके पोस्ट-कोविड आयुष उपचार भी शामिल किए। हमारी प्रयोगशाला में कोविड के लिए कई अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सिद्ध परीक्षणों के माध्यम से शरीर की प्रतिक्रिया का परीक्षण किया गया। परिणामों ने हमें स्पष्ट रूप से दिखाया कि ये सभी आयुष उपचार कोविड से लड़ने में बेहद प्रभावी हैं।"

इसके साथ ही उन्होंने कहा, "हमने दिल्ली पुलिसकर्मियों पर एक विशेष परीक्षण अभियान भी चलाया, जिसमें हमने उन्हें 3 महीने के लिए अपनी आयुरक्षा किट प्रदान की, जिसके आधार पर उनकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता में हलचल और अन्य प्रासंगिक कारकों पर नज़र रखी गई। हमने सार्वजनिक स्वास्थ्य संगठन के साथ भी एक शोध किया, और यह बताते हुए खुशी हो रही है कि दिल्ली पुलिसकर्मियों में अन्य शहरों की तुलना में मृत्यु दर और संक्रमण दर बहुत कम पाया गया।"

आयुष उत्पादों के बढ़ते निर्यात और स्टार्ट-अप्स का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा, "हमारे प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में किए गए सरकार के प्रयासों के कारण, अश्वगंधा, गिलोय, च्यवनप्राश आदि जैसे आयुष उत्पादों के निर्यात में 33% की वृद्धि दर्ज़ की गई है जो कि कोविड से पूर्व 5% था। निवेश के लिए 30 स्टार्ट-अप्स को पिच किया गया है।"

उन्होंने यह भी बताया कि आयुष मंत्रालय एक शोध पार्क के विकास पर अटल इनोवेशन मिशन के साथ मिलकर काम कर रहा है।

"आयुष मंत्रालय के प्रयासों से, वैश्विक आयुष निवेश और नवाचार शिखर सम्मेलन के दौरान 36 LOI पर हस्ताक्षर किए गए हैं। यह 5 लाख से अधिक लोगों को रोज़गार के अवसर प्रदान करेगा और 75 लाख लोगों को सीधे लाभांवित करेगा। इस क्षेत्र में बढ़ती स्टार्ट-अप संस्कृति आजीविका सृजन के लिए महत्वपूर्ण है।"

कैलाश खैर
गायक

आयुष : संवारे, सुधारे और स्वस्थ बनाए

"आज मैं आप सब को कुछ बताना चाहता हूँ, भारत की जो सनातन पद्धति है, जीवन को संवारने की, सुधारने की, और पोषण करने की, वो है आयुर्वेद और इसका सबसे बड़ा प्रमाण मिला है हमारे आयुष मंत्रालय की ओर से जिसने कोविड काल में लोगों को निरोग किया है। उन्होंने डटकर आयुर्वेद के माध्यम से लोगों का इलाज किया और आयुर्वेद पद्धति से लोगों को संवारा, उनका जीवन निखारा और अब देखिए चारों तरफ़ आनंद ही आनंद है। आज हमारे आयुर्वेद को आयुष मंत्रालय द्वारा पूरे विश्व तक पहुँचाया जा रहा है, पूरा विश्व नमन करके बोल रहा है *वाह भई वाह, भारत की तो बात ही अलग है, आयुष की तो बात ही अलग है।*"

आयुष- स्वास्थ्यपूर्ण जीवन सबके लिए

दुनियाभर में आयुर्वेद और भारतीय औषधियों के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। कोरोना के खिलाफ भी लड़ाई में आयुष ने वैश्विक स्तर पर अहम भूमिका निभाई है। दूरदर्शन की टीम ने आयुष लाभार्थियों से बातचीत कर उनके विचार जाने।

"मैं दूसरी लहर के दौरान कोविड-19 से पीड़ित थी। आयुष मंत्रालय द्वारा जारी किए गए स्व-देखभाल दिशानिर्देशों जैसे काढ़ा, च्यवनप्राश आदि के सेवन ने मुझे महामारी के खिलाफ लड़ाई जीतने में मदद की।"

-आरुषि शर्मा, नई दिल्ली

"अपनी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए आयुष मंत्रालय द्वारा बताए गए सामान्य उपाय जैसे हल्के गुनगुने पानी का सेवन, योग करना, हल्दी वाला दूध पीना, जीरा, हल्दी, लहसुन, धनिया आदि जैसे मसालों को अपने दैनिक भोजन में शामिल करना आदि, इन सभी सरल उपचारों से मेरी जैसी कई माताओं को अपने बच्चों को इस महामारी से सुरक्षित रखने में मदद मिली है।"

सुमन, पटना-बिहार

"आयुष मंत्रालय द्वारा सुझाए गए काढ़े ने लोगों को फिट रहने के लिए किए जा सकने वाले घरेलू उपचारों के बारे में अधिक जागरूक किया है। काढ़े में तुलसी, दालचीनी, कालीमिर्च, सोंठ, मुनक्का, गुड़ और नींबू का रस शामिल हैं। इन सामान्य उपायों ने हमें हमारी समृद्ध पारम्परिक सम्पदा को समझने में मदद की है।"

अविनाश, मुजफ्फरपुर-बिहार

"यह महामारी के दौर में था कि हमने महसूस किया कि कोविड-19 से लड़ने के लिए रोग-प्रतिरोधक क्षमता का मज़बूत होना सबसे अच्छा हथियार है। सरल घरेलू उपचार जैसे च्यवनप्राश, काढ़ा इत्यादि के उपभोग ने मुझे और मेरे परिवार को महामारी के बाद भी स्वस्थ और सुरक्षित रखा है। मैं सभी से इन सरल लेकिन सबसे प्रभावी आयुर्वेदिक उपचारों को अपने दैनिक जीवन में अपनाने का अनुरोध करता हूँ।"

निशा दासाना, नई दिल्ली

भारत की मीठी क्रांति

मधुमक्खी पालन क्षेत्र की मधुर सफलता

“आयुर्वेद के ग्रंथों में मधु को अमृतसुधा के तौर पर व्याख्यायित किया गया है। मधु की मिठास हमारे किसानों के जीवन में भी परिवर्तन ला रही है और उनकी आय वृद्धि में सहायक बनी है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने अपने हाल ही के ‘मन की बात’ सम्बोधन में मेरे काम और सफलता की कहानी को इतने बड़े मंच पर लाखों भारतीयों तक पहुँचाया। यह देश भर के लोगों के लिए प्रेरणा का एक उत्तम स्रोत है जो उन्हें अपने-अपने क्षेत्रों और देश में बड़े पैमाने पर काम करने की प्रेरणा देता है।”

-सुभाष कम्बोज
मधुमक्खी पालक, हरियाणा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत में एक ‘मीठी क्रांति’ की कल्पना की है। इसके अंतर्गत, देश में शहद उत्पाद की वृद्धि पर ज़ोर देना शामिल है, जिसके आधार पर ना केवल किसान की आमदनी दोगुनी होगी, बल्कि प्रकृति का अजूबा यानी शहद, भारतीय जीवनशैली का अभिन्न अंग बनेगा और एक स्वस्थ तथा आत्मनिर्भर भारत की नींव तैयार होगी।

फसलों की पैदावार बढ़ाकर मधुमक्खियाँ कृषि क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मधुमक्खी पालन से रोज़गार और आमदनी में भी वृद्धि होती है। वहीं, प्राचीन समय से समाज में शहद की पहचान उसके असरकारी औषधीय गुणों के तौर पर रही है और पारम्परिक स्वास्थ्य विज्ञान में भी इसका महत्वपूर्ण स्थाई स्थान रहा है। हैरानी इस बात की है कि आज आधुनिक चिकित्सा पद्धति में भी शहद का स्थान बरकरार है।

भारत की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में, ग्रामीण अर्थव्यवस्था के आर्थिक स्तर को बढ़ाने के लिए मीठी क्रांति के तहत, शहद और अन्य संबंधित उत्पादनों को बढ़ाने हेतु मधुमक्खी पालन को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत सरकार मधुमक्खी पालकों को सहयोग देने के लिए शहद उत्पाद की मार्केटिंग और

“प्रधानमंत्री द्वारा इस तरह के मंच पर हमारे काम को मान्यता देना हमारे लिए काफ़ी प्रेरक है। यह हमें अपने क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करने की जिम्मेदारी भी देता है। यह कई अन्य मधुमक्खी पालकों को अपने व्यवसाय को बढ़ाने और एक स्थाई पेशे के रूप में शहद उत्पादन को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।”

-निमित सिंह
मधुमक्खी पालक, उ.प्र.

निर्यात के नए रास्ते तलाशने के गम्भीर प्रयासों में जुटी है। राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन और शहद मिशन (एनबीएचएम) जैसी पहल में अधिकाधिक ज़ोर मधुमक्खी पालन, मधुमक्खी पालकों के समग्र विकास के अलावा, शहद तथा संबंधित अन्य उत्पादों को एकत्र करने, प्रोसेसिंग, व्यापार, परीक्षण एवं ब्रांडिंग पर भी दिया जा रहा है।

एनबीएचएम के अधीन नेशनल बी बोर्ड के तहत मधु क्रांति पोर्टल एक और नई शुरुआत है। यह शहद और मधुमक्खी के छत्ते से बनने वाले अन्य उत्पादों का पता लगाने के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन वाला डिजिटल प्लेटफॉर्म है। शहद की गुणवत्ता और मिलावट की जाँच के अलावा, यह मंच किसानों की आय बढ़ाने, निर्यात को बढ़ावा देने और रोज़गार में वृद्धि करने का कार्य भी कुशलता से कर रहा है।

मधुमक्खी पालन कला और विज्ञान दोनों है। यह भारत के सबसे पुराने पेशों में से एक माना जाता है और हालिया वर्षों में इसने खासी लोकप्रियता प्राप्त की है तथा देश भर में कई लोगों ने इस मुनाफ़े वाले व्यवसाय को अपनाया है। इस कार्यक्षेत्र में वैज्ञानिक विकास और सरकार द्वारा दिए जा रहे सहयोग के चलते, बड़ी संख्या में पुरुष, महिलाएँ, बच्चे और किसान मधुमक्खी

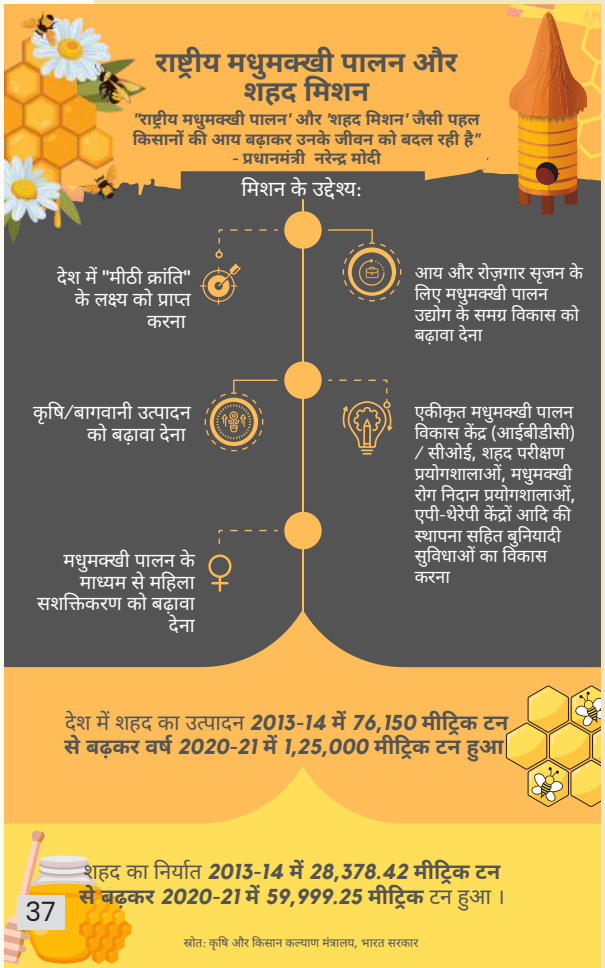

पालन कार्य में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने हालिया 'मन की बात' कार्यक्रम में ऐसे 4 भारतीयों की प्रेरणास्पद कथा सामने रखी जो न केवल मधुमक्खी पालन, बल्कि उससे अच्छी-खासी आमदनी कमा कर शहद उत्पादन के क्षेत्र में असाधारण उपलब्धियाँ भी हासिल कर रहे हैं। हरियाणा के यमुनानगर के सुभाष कम्बोज, जिन्होंने केवल छह बक्सों के साथ शुरुआत की थी, परंतु अब वह मधुमक्खी पालन के दो हज़ार से अधिक बक्सों का काम देखते हैं। जम्मू के पल्ली नामक गाँव के विनोद कुमार भी अपने गाँव में डेढ़ हज़ार कॉलोनियों में मधुमक्खी पालन का काम देख रहे हैं। कर्नाटक के मधुकेश्वर हेगड़े ने भारत सरकार से 50 मधुमक्खी कॉलोनियों के लिए मदद माँगी थी, आज वह 800 कॉलोनियों का काम देखते हैं और जामुन, तुलसी एवं आँवला जैसे औषधीय शहद के टनों उत्पाद बेचते हैं।

वैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित और पेशेवर तौर पर अग्रणी, आज के युवाओं ने मधुमक्खी पालन को स्व-रोज़गार का स्रोत बनाया है। प्रधानमंत्री ने गोरखपुर के निमित सिंह का भी ज़िक्र किया जो शहद उत्पाद का कार्य करते हैं और साथ ही किसानों को प्रशिक्षण देते हैं।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों की माँग को देखते हुए, भारत के कृषि और गैर-कृषि क्षेत्रों में शहद की पैदावार में असाधारण वृद्धि देखी गई है। अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों में शहद भेजने में भी तेज़ी आई है।

भारत में मधुमक्खी पालन और शहद उत्पादन आधारभूत कृषि-व्यवसाय हैं, जिसमें युवाओं के लिए असीम अवसर मौजूद हैं और इससे ना केवल मधुमक्खी पालकों को अच्छी आमदनी होती है बल्कि राष्ट्र के समूचे कृषि-विकास एवं कृषि उत्पाद में भी वृद्धि होती है।

प्रधानमंत्री का आह्वान

"देश ने राष्ट्रीय मधुमक्खी एवं शहद मिशन की शुरुआत की, किसानों ने मेहनत की और हमारे शहद की मिठास दुनिया भर में पहुँची। इस क्षेत्र में अभी भी अनेक सम्भावनाएँ हैं। मैं चाहता हूँ कि हमारा युवा इन अवसरों से जुड़े और नई सम्भावनाओं का लाभ उठाकर उन्हें मूर्त रूप दे।"

शहद कैसे बनता है

ग्रामीण सशक्तीकरण में सहायक मीठी क्रांति

विनय कुमार सक्सेना
उपराज्यपाल दिल्ली एवं केवीआईसी के पूर्व अध्यक्ष

छोटी शुरुआत के परिणाम अकसर बड़े होते हैं। कभी-कभी तो इनके आयाम इतने बड़े और इतने महत्वपूर्ण हो जाते हैं कि लोगों के जीवन में बड़ा परिवर्तन ले आते हैं। यह बात शहद अभियान (हनी मिशन) पर सटीक बैठती है, जो प्रधानमंत्री की देश में उस 'मीठी क्रांति' के आह्वान को साकार करने की दिशा में छोटा-सा क़दम है जिसमें उन्होंने देश में शहद उत्पादन बढ़ाने की परिकल्पना की थी। परिकल्पना साकार करने के केवल 5 वर्ष के प्रयासों ने, ग़रीबों और हाशिए पर जीने वाले लोगों का जीवन बदलने की दिशा में बड़ा काम किया है।

खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) के अध्यक्ष के रूप में मुझे राष्ट्रीय राजधानी में, राष्ट्रपति सम्पदा से अगस्त 2017 में शुरू हुए शहद अभियान का नेतृत्व करने का सौभाग्य मिला और मैं देश के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में, ग़रीब-से-ग़रीब व्यक्ति तक पहुँचा। शहद अभियान के साथ अनेक लोग पहली बार जुड़े हैं, जिन से मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देकर हज़ारों किसानों, आदिवासियों, महिलाओं, बेरोज़गार युवाओं और प्रवासी श्रमिकों को स्व-रोज़गार और टिकाऊ आजीविका का लाभ मिला है। यहाँ मानव जाति के लिए शहद अभियान के सबसे बड़े योगदान का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि इसने पारिस्थितिकी की रक्षा की और मधुमक्खी पालन को प्रोत्साहन दे कर खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की है।

मैं यहाँ अल्बर्ट आइंस्टाइन को उद्धृत करूँगा:

"धरती से अगर मधुमक्खियाँ ग़ायब हो गईं तो मानव के पास जीने के लिए चार साल से अधिक वर्ष नहीं बचेंगे।"

केवीआईसी ने अब तक देश भर में 1 लाख 70 हज़ार से अधिक मधुमक्खी-पेटियाँ (बी-बॉक्स) वितरित की हैं, जिससे इस प्रमुख योजना के तहत 50,000 से अधिक रोज़गार पैदा हुए और लगभग 15,000 मीट्रिक टन शुद्ध शहद का उत्पादन हुआ। यह वास्तव में, बहुत गर्व की बात है कि इन पाँच वर्ष में, शहद अभियान ने प्रकृति में, साढ़े आठ अरब मधुमक्खियाँ जोड़ी हैं जो पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

इसके साथ ही, यह शहद अभियान जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और अरुणाचल प्रदेश के ऊँचे हिमालयी क्षेत्रों, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के घने जंगलों, हरियाणा के मैदानी इलाकों, उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड तथा दक्षिणी भारत के कई अन्य राज्यों में पहुँच चुका है।

असम के काज़ीरंगा में तो शहद अभियान, अवैध शिकार से लड़ने का एक हथियार और आतंकवाद प्रभावित जम्मू और कश्मीर में यह ग्रामीण रोज़गार का सबसे शक्तिशाली साधन बन गया। 2018 में, केवीआईसी ने भारतीय सेना की मदद से जम्मू और कश्मीर के कुपवाड़ा ज़िले में एक ही दिन में सबसे अधिक 2,330 मधुमक्खी-पेटियाँ वितरित करके विश्व कीर्तिमान स्थापित किया।

शहद अभियान की उपलब्धियों पर सरसरी नज़र डालने से ही पता चल जाता है कि हाल के वर्षों में इसने क्या सामाजिक बदलाव किया है। शहद अभियान के लाभार्थियों में महिलाओं की संख्या लगभग 16% है। इस योजना के तहत केवीआईसी द्वारा प्रशिक्षित कुल मधुमक्खी पालकों में से 43% अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों से हैं। शहद अभियान के तहत प्रशिक्षित मधुमक्खी पालक, हर वर्ष औसतन 1 लाख 20 हज़ार रुपये सफलतापूर्वक कमा रहे हैं। देश भर में, मधुमक्खी पालकों की वार्षिक आय में पर्याप्त 33% वृद्धि हुई है, जो उनके आर्थिक सशक्तीकरण में योगदान दे रही है। शहद अभियान के 96% लाभार्थियों ने सफलतापूर्वक अपनी मधुमक्खी कॉलोनियों को कई गुणा बढ़ा लिया है, जो आगे चलकर अधिक शहद उत्पादन और अधिक आय का साधन बनती हैं। किसानों के लिए तो ये और भी ख़ुशी की बात है कि मधुमक्खियों की मदद से पर-परागण होने के कारण उनकी उपज में 20 से 25% की वृद्धि हुई है।

यह शहद अभियान ही है जो अकेले अपने दम पर, संयुक्त राष्ट्र सतत विकास के कम से कम 5 लक्ष्यों-ग़रीबी नहीं, शून्य भुखमरी, भूमि पर जीवन, लिंग समानता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को पूरा करने में योगदान दे रहा है।

अब जब मैं शहद अभियान की बागडोर केवीआईसी में अपने उत्तराधिकारी को सौंप रहा हूँ तो चाहता हूँ कि ग्रामीण सशक्तीकरण का यह साधन और अधिक ऊँचाइयाँ प्राप्त करे और मानव जाति को इसका 'मीठा फल' मिले।

सुभाष कम्बोज : 6 से 2,000 मधुमक्खी बक्सों तक का सफ़र

हरियाणा के यमुनानगर में रहने वाले एक मधुमक्खी पालक की ओर देश का ध्यान तब खिंचा जब प्रधानमंत्री ने अपने हाल ही के 'मन की बात' सम्बोधन में मधुमक्खी पालन क्षेत्र की मधुर सफलता की कहानी साझा की। **सुभाष कम्बोज** जो की एक किसान और मधुमक्खी पालक हैं, उन्होंने वैज्ञानिक तरीके से मधुमक्खी पालन की ट्रेनिंग ली है। अपने समर्पण और कड़ी मेहनत के साथ, उन्होंने 'कम्बोज हनी बी फार्म प्राइवेट लिमिटेड' को सफलता के शिखर पर पहुँचाया है। उनका यह व्यवसाय जो केवल 6 बक्से से शुरू हुआ था, अब भारत के कई राज्यों में शहद की आपूर्ति के साथ दो हज़ार बक्से तक पहुँच गया है।

शहद उत्पादन और मधुमक्खी पालन क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले आज के युवा और किसानों के लिए, सुभाष उन्हें छोटे स्तर से शुरुआत करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। सुभाषजी का मानना है कि इच्छुक लोग अपनी मेहनत और लगन से इस क्षेत्र के औद्योगीकरण को बढ़ावा देने के साथ-साथ आर्थिक रूप से भी अधिक ऊँचाइयों तक पहुँचाएँगे। सुभाषजी का कहना है कि यह एक बढ़ता हुआ क्षेत्र है और इसके अपने कई लाभ हैं। यह न केवल एक अतिरिक्त और आकर्षक स्रोत बनकर किसानों की आय को दोगुना करता है बल्कि किसानों की फसलों को बढ़ाने और विशेष रूप से बेरोज़गार युवाओं के लिए रोज़गार पैदा करने का एक स्थाई स्रोत भी है।

'मन की बात' में अपने उल्लेख के पश्चात वह प्रधानमंत्री के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुए कहते हैं, "यह देश भर के लोगों के लिए प्रेरणा का एक उत्तम स्रोत है जो उन्हें अपने-अपने क्षेत्रों और देश में बड़े पैमाने पर काम करने की प्रेरणा देता है। मधुमक्खी पालन में उनकी सफलता इस बात का सच्चा प्रमाण है कि कैसे जुनून, साहस और कड़ी मेहनत हमेशा सफलता का फल देती है।"

विनोद कुमार : जम्मू के पल्ली गाँव की शान

*हाल ही के 'मन की बात' सम्बोधन में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जम्मू के गाँव पल्ली के एक मधुमक्खी पालक की प्रेरक कहानी साझा की, जो न केवल पेशे से 15-20 लाख सालाना कमाते हैं, बल्कि उन्होंने अद्वितीय रानी मधुमक्खी पालन में उन्नत प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है। हमारी दूरदर्शन की टीम ने **विनोद कुमार** से उनके काम के बारे में बात की।*

"मैं 27 साल से मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में काम कर रहा हूँ। मैंने छोटे पैमाने पर काम शुरू किया और आज मेरे पास 1200-1300 बक्से हैं, जिनसे मैं खुशी-खुशी अपना घर चलाता हूँ। मैं कामना करता हूँ कि हमारे अधिक-से-अधिक किसान भाई अन्य व्यवसायों के साथ-साथ मधुमक्खी पालन के पेशे को अपनाएँ, इससे निश्चित रूप से उनकी आय में वृद्धि होगी," विनोद कुमार ने बताया।

पल्ली गाँव का गौरव बन चुके विनोद कुमार वर्तमान में डेढ़ हज़ार से अधिक कॉलोनियों में मधुमक्खी पालन कर रहे हैं और सच्चे मन से इस उद्योग के लिए समर्पित हैं। इससे उन्हें अपना घर चलाने और कई लोगों के लिए रोज़गार पैदा करने में मदद मिलती है।

विनोद कुमार की बेटी भावना कुमार ने बी.एस.सी करने के बाद अपने पिता के नक्शेकदम पर चलकर आगे मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में पढ़ाई और काम करने की योजना बनाई है। "मेरे पिता मेरी प्रेरणा हैं। बचपन से ही हमने उन्हें अपने पेशे में कड़ी मेहनत करते देखा है। उनकी सारी मेहनत और लगन तब सफल हुई जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूरे देश के सामने अपने 'मन की बात' में उनके नाम का ज़िक्र किया। मुझे उन पर बहुत गर्व है और मैं शहद उत्पादन के इस बढ़ते क्षेत्र में उनके बताए मार्ग पर आगे बढ़ूँगी।"

विनोद कुमार की कहानी जानने के लिए QR Code स्कैन करें

मधुमक्खी पालन में नवाचार ला रहे हैं मधुकेश्वर हेगड़े

जब नाम में ही 'मधु' शब्द हो तो सफलता की कहानी मीठी होनी चाहिए। कर्नाटक के एक किसान ने मधुमक्खी पालन को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया है।

मधुकेश्वर हेगड़े *ने अपनी मधुमक्खी पालन की कहानी के बारे में हमारी दूरदर्शन टीम से बात की।*

अपने 'मन की बात' सम्बोधन में, प्रधानमंत्री ने बताया कि मधुकेश्वर जी ने 50 मधुमक्खी कॉलोनियों के लिए भारत सरकार से सब्सिडी का लाभ उठाया था। आज, उनके समर्पण, कड़ी मेहनत और दृढ़ता के प्रतिफल के रूप में, उनके पास 800 से अधिक कॉलोनियाँ हैं और वे पूरे देश में कई टन शहद बेचते हैं।

इतना ही नहीं, मधुकेश्वर हेगड़े इसे एक कदम आगे लेकर गए और इस काम में नवीनता लाए हैं। मधुकेश्वर जी शहद उत्पादन के अपने स्पेक्ट्रम का विस्तार करते हुए जामुन शहद, तुलसी शहद और आँवला शहद की एक स्वादिष्ट विविधता के साथ वनस्पति शहद भी बना रहे हैं।

अपने नाम के अर्थ के प्रति सच्ची प्रतिष्ठा रखते हुए, मधुकेश्वर हेगड़े निश्चित रूप से अपने राज्य के लिए मिठास का मीठा स्पर्श ला रहे हैं और अपने देश के लोगों का गौरव बढ़ा रहे हैं। "प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में मेरा नाम लिया और मेरी कहानी पूरे देश से साझा करके मुझे बहुत बड़ा सम्मान दिया है। इसके लिए मैं उनका बहुत आभारी हूँ। यह लोगों के समर्थन और सहयोग के ही कारण है और विशेष रूप से विश्वेश्वर हेगड़े, जिनके समर्थन के बिना मैं इतनी ऊँचाइयों तक नहीं पहुँच पाता।"

डॉ. मधुकेश्वर हेगड़े के बारे में अधिक जानने के लिए QR Code स्कैन करें

निमित ने इंजीनियरिंग छोड़ बी-कीपिंग को बनाया कॅरियर

भारत के युवा अपने भविष्य के प्रति जागरूक एवं नवप्रवर्तक बनने के साथ ही स्थाई विकल्प भी चुन रहे हैं। कल के चेंज-मेकर्स और भारत के भविष्य के पथ प्रदर्शक युवा रोज़गार के क्षेत्र में क्रांति ला रहे हैं। *ऐसे ही एक युवक हैं गोरखपुर, उत्तर प्रदेश के* ***निमित सिंह*** *जिनसे हमारी दूरदर्शन टीम ने बात की।*

डॉक्टरों के परिवार से संबंधित निमित ने अपनी बी-टेक की पढ़ाई के बाद नौकरी करने की बजाय स्वरोज़गार का रास्ता चुना और शहद उत्पादन में अपना कॅरियर बनाया। अपने सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक तौर पर लागू करते हुए, निमित ने न केवल एपीकल्चर का व्यवसाय शुरू किया बल्कि लखनऊ में उत्पादित शहद की गुणवत्ता जाँच के लिए एक प्रयोगशाला भी स्थापित की। निमित व्यवसाय से अच्छी आय अर्जित कर रहे हैं, लेकिन आगे बढ़ने का उत्साह सिर्फ यहीं नहीं रुका। वह भारत के विभिन्न राज्यों में एपीकल्चर के कौशल और विज्ञान पर किसानों को प्रशिक्षण भी दे रहे हैं।

निमित कुमार के करीबी सहयोगी, आलोक कुमार ने बताया, "दो साल पहले निमित ने पीएम युवा स्वरोज़गार योजना के तहत 10 लाख की ऋण राशि ली थी। इसके बाद उन्होंने काफ़ी मेहनत से अपना कारोबार स्थापित किया। आज कई बेरोज़गार युवाओं को इनके द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है। उनके द्वारा एक शहद प्रसंस्करण इकाई भी स्थापित की गई है। दृढ़ निश्चय और विश्वास के साथ, निमित ने पूरे राज्य में एक विशेष पहचान बनाई है और एपीकल्चर का एक ब्रांड स्थापित किया जो आज पूरे उत्तर प्रदेश में प्रसिद्ध हो गया है।"

'मन की बात' में अपने उल्लेख के बारे में निमित ने कहा, "यह कई अन्य मधुमक्खी पालकों को अपने व्यवसाय को बढ़ाने और एक स्थाई पेशे के रूप में शहद उत्पादन को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है, और राष्ट्र का ध्यान उन बहुमुखी तरीकों की ओर भी लाता है जिनमें प्रकृति के जीव, मधुमक्खियाँ मानवजाति के लिए योगदान दे रही हैं और इसके लिए मैं प्रधानमंत्री का बेहद आभारी हूँ।"

मेलों की संस्कृति

भारत की परम्परागत जीवंतता

“मेले हमारे समाज और जीवन के लिए ऊर्जा का स्रोत हैं। आधुनिक समय में समाज की ये पुरानी कड़ियाँ ‘एक भारत-श्रेष्ठ भारत’ की भावना को मजबूत करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

भारतीय कैलेंडर अंतहीन लोक कथाओं और मान्यताओं के रंग और ताल पर नृत्य करता है। मौसम और धर्म के साथ हर क्षेत्र में जश्न मनाने के लिए बहुत कुछ है। यह कहा जा सकता है कि देश के किसी-न-किसी कोने में हर दिन कम-से-कम एक पारम्परिक त्योहार या मेला मनाया जाता है। इनमें से अधिकांश उत्सव धार्मिक मान्यताओं, रीति-रिवाज़ों, परम्पराओं, ऋतुओं के परिवर्तन और कृषि गतिविधियों के इर्द-गिर्द घूमते हैं।

ये मेले न केवल सामाजिक समूहों को सेवाओं, वस्तुओं और उपहारों के आदान-प्रदान के माध्यम से एक-दूसरे से बँधे रहने में मदद करते हैं, बल्कि भारतीय समाज और संस्कृति को पनपने के लिए एक एकीकृत आधार भी प्रदान करते हैं। वास्तव में, भारतीय समुदाय में जो एकता की भावना पाई जाती है, वह काफ़ी हद तक भारत में मेलों और त्योहारों की इस संस्कृति के दृढ़ पालन के कारण है। ये नहीं होते तो भारतीय समाज का अपने लम्बे इतिहास में हुए उथल-पुथल भरे परिवर्तनों से उबर पाना मुश्किल होता।

अपने हालिया ‘मन की बात’ के दौरान, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हमारे देश में मेलों के सांस्कृतिक महत्व के बारे में बात की। उन्होंने हिमाचल प्रदेश के मिंजर मेले और सैरा जैसे विभिन्न मेलों का उल्लेख किया जो कृषि का जश्न मनाते हैं। जहाँ उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के जागरा मेले में धार्मिक आयोजन होते हैं वहीं तेलंगाना के मेदाराम जतारा या समक्का सरलम्मा जतारा, आंध्र प्रदेश के मरिदम्मा मेला, राजस्थान का सियावा मेला, छत्तीसगढ़ का मावली मेला, मध्य प्रदेश का भगोरिया मेला, गुजरात का तरणेतर और माधोपुर मेला जैसे कई आदिवासी त्योहार हैं। प्रत्येक मेला भारत की एक अनूठा झलक प्रदान करता है और ‘एक भारत-श्रेष्ठ भारत’ के लोकाचार को संजोता है।

ये मेले और त्योहार हमें विभिन्न संस्कृतियों और परम्पराओं को देखने, सीखने और आनंद लेने का एक अनूठा अवसर प्रदान करते हैं। वास्तव में, मेलों में भाग लेना भारत को जानने और समझने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है। यह बात सिर्फ़ विदेशी पर्यटकों के लिए ही नहीं, बल्कि देश के हर नागरिक के लिए सच है। भारत प्राचीन इतिहास, विरासत और संस्कृति की भूमि होने के कारण दुनिया भर में सांस्कृतिक पर्यटन के लिए पसंदीदा स्थलों में से एक है। हर साल लाखों पर्यटक भारत की विविध संस्कृति को देखने के लिए भारत की यात्रा करते हैं। पारम्परिक मेले हमारे देश की सांस्कृतिक विरासतों में से एक हैं और यह दूर-दूर से पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। उदाहरण के लिए, राजस्थान के पुष्कर में आयोजित होने वाला पुष्कर मेला एक वार्षिक बहु-दिवसीय पशुधन मेला है जो अकेले भारत और विदेशों से लगभग 2 लाख पर्यटकों को आकर्षित करता है। इसी तरह, कुम्भ मेले में भारत और विदेशों से 20 करोड़

“नारायणपुर का मावली मेला तब से बहुत प्रसिद्ध हो गया है जब से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने ‘मन की बात’ में इसका उल्लेख किया है। मैं प्रधानमंत्री जी का बहुत आभारी हूँ।”

-जैकी कश्यप
देव मेला समिति के सदस्य,
मावली मेला

श्री राम रथोत्सव मेला, महाराष्ट्र

माघ मेला, ओडिशा

बैसाखी मेला, पंजाब

पुष्कर मेला, राजस्थान

मेदाराम जतारा, तेलंगाना

> "जब मैंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को मिंजर मेले के बारे में बात करते हुए सुना, तो मैं चकित रह गया। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह मेरे पत्र के बारे में बात कर रहे हैं। उनका उल्लेख इस आयोजन को लोकप्रिय बनाएगा और अधिक लोगों को चम्बा की समृद्ध संस्कृति के बारे में पता चलेगा।"
>
> **-श्री आशीष बहल**
> स्कूल शिक्षक, चम्बा

से अधिक आगंतुक आते हैं। यह एक तस्वीर प्रस्तुत करता है कि क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए ये सांस्कृतिक उत्सव कितने लोकप्रिय हैं।

ये मेले ऐसे स्थान भी बन जाते हैं जहाँ पारम्परिक कला और संस्कृति को सुंदर तरीके से प्रदर्शित किया जाता है क्योंकि स्थानीय कलाकार और शिल्पकार लोक नृत्य, संगीत, रंगमंच और हस्तशिल्प के माध्यम से अपने कौशल को दुनिया के सामने लाते हैं। भारत के पारम्परिक मेले भी आत्मनिर्भर भारत को बढ़ावा देते हैं और 'वोकल फॉर लोकल' की आवाज़ को सुदृढ़ करते हैं। वे बाज़ारों की भूमिका निभाते हैं जो खिलौनों, सजावट, वस्त्र और अन्य सामानों के रूप में स्वदेशी उत्पादों से भरे होते हैं। सांस्कृतिक पर्यटन में वृद्धि से न केवल स्थानीय व्यापारियों को मदद मिलती है, बल्कि इससे क्षेत्र के अन्य व्यवसायों जैसे होटल, रेस्तराँ, यात्रा और पर्यटन आदि पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता

है। कुल मिलाकर, मेले अप्रत्यक्ष रूप से स्थानीय लोगों को आजीविका प्रदान करके उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार करने में भी मदद करते हैं।

भारत की प्राचीन संस्कृति अभी भी मज़बूत है क्योंकि हमारे पूर्वजों ने इसे अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए लोककथाओं, त्योहारों, साहित्य जैसे विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल किया है। मेला उनमें से एक ऐसा माध्यम है जो न केवल हमारी समृद्ध संस्कृति की विभिन्न कहानियों को बताता है, बल्कि समाज में आपसी सम्मान और भाईचारे के भारतीय मूल्यों को मज़बूत करने के लिए विविध लोगों को एक साथ लाता है।

भारत के मेलों के बारे में जानने के लिए QR code स्कैन करें

प्रधानमंत्री का आह्वान

"युवाओं को मेलों का दौरा करना चाहिए और तस्वीरें सोशल मीडिया पर भी साझा करनी चाहिए। वे चाहें तो किसी खास हैशटैग का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे अन्य लोगों को हमारे पारम्परिक मेलों के बारे में पता चलेगा।"

"अगले कुछ दिनों में संस्कृति मंत्रालय एक प्रतियोगिता शुरू करने जा रहा है, जहाँ मेलों की बेहतरीन तस्वीरें भेजने वालों को पुरस्कृत भी किया जाएगा। तो देर न करें, मेलों में जाएँ, उनकी तस्वीरें साझा करें, और शायद आपको भी पुरस्कार मिले।"

मरीदम्मा, आंध्र प्रदेश

अंबुबाची मेला, असम

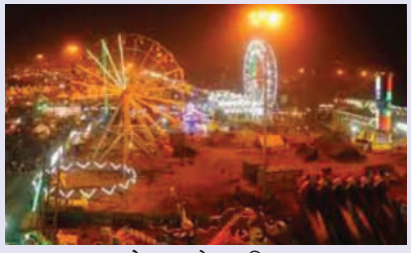

सोनपुर मेला, बिहार

मावली मेला, छत्तीसगढ़

तरणेतर, गुजरात

डॉ. हिमन्त बिस्व सरमा

मुख्यमंत्री, असम

माधवपुर घेड़ मेले का आनन्द और अनुभव

हम लोग पोरबंदर से कुछ जल्दी ही निकल पड़े थे। पोरबंदर से माधवपुर तक सड़क बहुत ही बढ़िया थी। ये सड़क अरब सागर तट के समांतर चलती है। सुहानी हवा महसूस हो रही थी, और बुनियादी ढाँचा भी ऐसी उत्तम गुणवत्ता का था जो वाइब्रेंट गुजरात की भावना और चरित्र का सही प्रतिनिधित्व करता था।

गुजरात के इस हिस्से में यह मेरी पहली यात्रा थी। मैं एक स्थानीय मेले में भाग लेने के लिए माधवपुर जा रहा था। मैं लगभग दो दशक से मंत्री और अब मुख्यमंत्री हूँ। इस नाते अपने राज्य, देश और कुछ विदेशों के अनेक स्थान देखने का अवसर मिला है और इन यात्राओं के दौरान मेरे भीतर का उत्सुक जिज्ञासु मुझ पर हावी हो जाता है। मैं जहाँ भी जाता हूँ, वहाँ की संस्कृति, समाज, और लोगों के कई पहलुओं को जानने और समझने की कोशिश करता हूँ।

हम समय से कुछ पहले ही पहुँच गए। शानदार स्वागत समारोह हुआ। गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री वहाँ पहले से उपस्थित थे। पूरी यात्रा के दौरान, मुझे कई पौराणिक कथाएँ याद आईं। गुजरात में माधवपुर की मिट्टी थी जहाँ भगवान् श्रीकृष्ण ने पूर्वोत्तर भारत की बेटी रुक्मिणी देवी से विवाह किया था। यह मेरा सौभाग्य था कि इस 'धन्य पुण्य भूमि' का दर्शन कर कृतार्थ हो सका, जो न केवल पावन है, बल्कि देश के कई महापुरुषों की जन्मभूमि भी है- महात्मा गाँधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, और अब नरेन्द्र मोदी जी।

मेरा राज्य असम भी मेलों और उत्सवों के लिए प्रसिद्ध है। गुवाहाटी की नीलाचल पहाड़ियों पर स्थित कामाख्या मंदिर के परिसर में हर वर्ष अम्बुबाची मेला आयोजित होता है। यह मेला, देश भर से आने वाले श्रद्धालुओं के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक समागम की अनूठी मिसाल है। गुजरात में माधवपुर घेड़ मेला देखकर मुझे अहसास हुआ कि हमारा देश तो इसी अनेकता की एकता में बसता है। यही वजह है कि हमारे प्रधानमंत्री ने 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की अवधारणा प्रतिपादित की।

असम और गुजरात राज्य के बीच तीन हज़ार किलोमीटर की भौगोलिक दूरी है, पर फिर भी दोनों राज्य इतिहास और सभ्यता की मज़बूत जड़ों से जुड़े हैं जो चार हज़ार वर्ष से भी प्राचीन हैं। हमारी पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी से विवाह किया था, जो पूर्वोत्तर भारत में कहीं स्थित कुण्डील रियासत की राजकुमारी थीं। बात यहीं समाप्त नहीं होती। हमारे असम के सुप्रसिद्ध गायक भारत रत्न से सम्मानित डॉ. भूपेन हज़ारिका ने प्रियम्वदा पटेल से विवाह किया था जिनका परिवार गुजरात की इसी पावन धरती से संबंध रखता था। ये भी दिलचस्प है कि प्राचीन काल से शुरू हुआ यह बंधन हर दिन बढ़ता जा रहा है। दोनों राज्य, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और दार्शनिक स्तर पर एक दूसरे के साथ मज़बूती से जुड़े हैं और दोनों का एक ही ध्येय है - देश की एकजुटता।

राज्य की भावना के अनुरूप, माधवपुर घेड़ मेला बहुत ही पेशेवर तरीके से आयोजित किया गया था और मेला देखने के बाद मेरा व्यक्तिगत अनुभव अत्यंत अनूठा रहा। हर तरह के प्रबंध इतने व्यवस्थित थे कि यहाँ आने वाले लोगों को विशाल मेले में भी अपने घर जैसा अनुभव मिल रहा था।

यही नहीं, मेले के भक्ति भाव, सांस्कृतिक परम्पराओं, और विभिन्न क्षेत्रों से आए हर तरह के लोगों के समागम ने इस मेले को वास्तव में राष्ट्रीय पर्यटन कैलेण्डर का एक अहम कार्यक्रम बना दिया है। व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए यह अनुभव बहुत ही हर्षप्रद रहा। श्रीकृष्ण और रुक्मिणी के पौराणिक विवाह को यहाँ समारोहपूर्वक फिर जीवंत किया जाता है जिसे देखने माधवपुर और आसपास के गाँवों के लोग एकत्र होते हैं। बेहद खुशी की बात है कि यह रंगरंगीला माधवपुर घेड़ मेला चैत्र मास यानी मार्च-अप्रैल में मनाया जाता है जब असम में भी रोंगाली बिहु की धूम होती है। इस दृष्टि से असम और गुजरात के लोग सांस्कृतिक रूप से आपस में जुड़े प्रतीत होते हैं।

मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने माधवपुर घेड़ मेले को त्वरित ख्याति प्राप्त कराने में सक्रिय भूमिका निभाई। यह मेला हमें देश की महानता का ही अहसास नहीं कराता अपितु सार्वभौमिक भाईचारे की भावना से भी ओतप्रोत करता है। अभी हाल में, 31 जुलाई, 2022 को 'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने देश भर में आयोजित होने वाले विभिन्न मेलों का उल्लेख किया था। इसी से मुझे भी माधवपुर घेड़ मेले के बारे में अपने विचार व्यक्त करने की प्रेरणा मिली।

हम अपने प्रधानमंत्री के नेतृत्व के आभारी हैं। गत आठ वर्षों में कई उपलब्धियाँ प्राप्त की गई हैं जिन में से एक अपनी गौरवपूर्ण परम्पराओं, संस्कृति, और आत्मिक ऊर्जा को फिर से पाना है। माधवपुर घेड़ मेला इस उत्कृष्ट पहल का एक शानदार उदाहरण है।

हिमाचल का ऐतिहासिक मिंजर मेला

चम्बा के लोकप्रिय मिंजर मेले में देशभर से बड़ी संख्या में लोग आते हैं। यह मेला श्रावण माह के दूसरे रविवार को लगता है। इसकी घोषणा मिंजर के वितरण द्वारा की जाती है, जो पुरुषों और महिलाओं द्वारा पोशाक के कुछ हिस्सों पर पहना जाने वाला रेशम का लटकन है।

सप्ताह भर चलने वाला यह मेला तब शुरू होता है जब शहर के ऐतहासिक चौगान इलाके में मिंजर का झंडा फ़हराया जाता है। लोग अपने बेहतरीन परिधानों में निकलते हैं और इसी के साथ पूरा चम्बा रंगीन हो जाता है। खेल-कूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी यहाँ होता है। तीसरे रविवार को, उल्लास, रंगीनता और उत्साह अपने चरम पर पहुँच जाते हैं, जब देवताओं का रंगीन मिंजर जुलूस, नृत्य मंडलियों, पारम्परिक रूप से तैयार स्थानीय लोगों, पारम्परिक ढोल वादकों के साथ पुलिस और होमगार्ड बैंड के साथ अखंड चंडी पैलेस से मार्च शुरू करता है।

पर्यटकों के लिए मिंजर मेला समृद्ध संस्कृति को देखने, पारम्परिक व्यंजनों का स्वाद लेने, और प्रसिद्ध कशीदाकारी चम्बा रुमाल, हाथ से बने हुए शॉल, और चम्बा चप्पल जैसे स्मृति चिह्न खरीदने का एक अच्छा स्थान है।

'मन की बात' में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मिंजर का अर्थ बहुत ही सुंदर तरह से बताते हुए चम्बा के एक स्कूल शिक्षक का ज़िक्र भी किया। *दूरदर्शन की टीम से बात करते हुए* ***आशीष बहल*** *ने कहा:*

"प्रधानमंत्री हमेशा 'मन की बात' के दौरान संस्कृति, परम्पराओं, और अन्य सम्बंधित प्रथाओं के बारे में उल्लेख करते हैं। इस बात से प्रेरित हो कर मैंने मिंजर मेले के पहले दिन उन्हें एक पत्र लिखा जिसमें मिंजर मेले, चम्बा की समृद्ध संस्कृति, और परम्पराओं के बारे में विस्तार से बताया। मैंने उनसे अनुरोध किया के उनके द्वारा मेले का उल्लेख क्षेत्र की परम्परा और संस्कृति को बढ़ावा देने के साथ-साथ चम्बा के पर्यटन को बढ़ाने में भी मदद करेगा। हम, चम्बा निवासी, खुद को भाग्यशाली मानते हैं कि प्रधानमंत्री ने हमारी परम्परा के बारे में इतने सुंदर तरह से लोगों के सामने रखा। उनके उल्लेख के कारण आज मिंजर मेला न सिर्फ़ राष्ट्रीय बल्कि वैश्विक स्तर पर जाना जा रहा है। मुझे यकीन है कि हमारी संस्कृति और परम्पराएँ उसी तरह से फ़लती-फ़ूलती रहेंगी जैसे सदियों से चली आ रही हैं।"

लोगों को जोड़ता माधवपुर मेला

गुजरात के पोरबंदर ज़िले में स्थित माधवपुर घेड़ एक छोटा लेकिन सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण गाँव है। यह वह स्थान हैं, जहाँ लोक कथाओं के अनुसार भगवान् श्री कृष्ण ने राजा भीष्मक की पुत्री, रुक्मणि से विवाह किया था। हर साल यहाँ रामनवमी पर 15वी शताब्दी में बने माधवराई मंदिर में पाँच दिवसीय माधवपुर मेला लगता है। यह मेला भगवान् श्रीकृष्ण और रुक्मणि के विवाह का जश्न मनाने के लिए आयोजित किया जाता है। यह त्योहार-रुपी मेला उस अमर यात्रा का जश्न भी मनाता है जो रुक्मिणी ने भगवान् श्रीकृष्ण के साथ अरुणाचल प्रदेश से गुजरात तक की थी।

माधवपुर मेला पश्चिम और उत्तर-पूर्वी भारत की संस्कृतियों को एक साथ लाकर देश की अनूठी सांस्कृतिक विविधता और जीवंतता का भी जश्न मनाता है। मेले का संबंध अरुणाचल प्रदेश की मिशमी जनजाति से है। माना जाता है कि मिश्मी जनजाति राजा भीष्मक के वंशज हैं।

मेले में न केवल उत्तर पूर्व के लोग बल्कि देश के अन्य हिस्सों के लोग भी भाग लेते हैं। एक रंगीन रथ भगवान् श्रीकृष्ण की मूर्ति के साथ गाँव की परिक्रमा करता है। मेले में एक प्रतीकात्मक 'रुक्मिणी स्वयंवर' भी आयोजित किया जाता है जहाँ लोग रुक्मिणी और उसके जीवन के बारे में कहानियाँ सुनाते हैं। ये कहानियाँ अक्सर नृत्य या गीत का रूप ले लेती हैं। खुल्लोंग ईशी की शैली में रुक्मणि से संबंधित गीत, नृत्य-नाटक द्वारा रुक्मणि-कृष्ण की दंत कथाएँ और इदु मिश्मी जनजाति द्वारा लोक नृत्य का अनुभव भी इस मेले में किया जा सकता है। हर शाम दयारो (गुजराती लोक गीतों का एक रूप) के कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। दोनों संस्कृतियों के बीच ज्वलंत कला, संस्कृति, और व्यंजनों का भी आदान-प्रदान होता है। सचमुच माधवपुर मेला 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का आदर्श उदाहरण है।

पोरबंदर के ज़िला विकास अधिकारी, **विनोद आडवाणी** ने बताया, "सन् 2022 में मेले का उद्घाटन भारत के पूर्व राष्ट्रपति, श्री राम नाथ कोविन्द द्वारा हुआ था। 2018 में राज्य और केंद्र सरकार की भागीदारी से, इस मेले को बड़े पैमाने पर आयोजित करना शुरू किया गया था। आज मेले में उत्तर-पूर्वी राज्यों के मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री, और देशभर के अधिकारी शामिल होते हैं।"

मावली मेला: बस्तर का समृद्ध आदिवासी रिवाज़

छत्तीसगढ़ के बस्तर के नारायणपुर ज़िले में होने वाला वार्षिक मावली मेला पारम्परिक आदिवासी संस्कृति का प्रतिनिधि है। आज भी बस्तर के दूरदराज़ के इलाकों में इसके लिए उत्साह देखते बनता है। फ़ागुन के महीने में, जो कि फरवरी-मार्च के आसपास होता है, इस मेले का आयोजन आदिवासी समुदाय द्वारा किया जाता है। मेले में न केवल स्थानीय लोग, बल्कि देश और दुनिया के विभिन्न हिस्सों से भी लोग शामिल होते हैं। देवी मावली की अनुमति और आशीर्वाद लेने के बाद, बुधवार के दिन इस मेले की शुरुआत होती है। आरती के पश्चात भक्त परिक्रमा करना शुरू करते हैं जो कि एक दर्शनीय नज़ारा होता है। विभिन्न गाँवों के आदिवासी अपनी पारम्परिक पोशाकों में नृत्य कर अपनी परम्परा और संस्कृति का प्रदर्शन करते हैं।

तरणेतर मेला: पौराणिक कथाओं का जश्न मनाता एक जीवंत प्रसंग

भारत के बारे में सबसे अच्छी चीज़ों में से एक है यहाँ के कई रंग और भव्य उत्सवों का साक्षी बनना। कई जीवंत समारोह में से एक है वार्षिक तरणेतर मेला, जो सुंदर नगर गुजरात में होता है। हर साल भाद्रव सूद के महीने में, अहमदाबाद से लगभग 200 किलोमीटर दूर एक छोटे-सा गाँव, तरणेतर, इस मेले के दौरान रंगों से भर उठता है। यह त्योहार मूल रूप से महाभारत की कथा 'द्रौपदी स्वयंवर' से जुड़ा है। 19वीं सदी में बने त्रिनित्रेश्वर महादेव मंदिर में इस तीन दिवसीय मेले का आयोजन हर साल किया जाता है। मेले में पारम्परिक संगीत और नृत्य प्रदर्शन भी देखा जा सकता है। तरणेतर मेला लोक और ग्राम संस्कृति को दुनिया के सामने लाता है।

मेदाराम जतारा: एशिया का सबसे बड़ा जनजातीय मेला

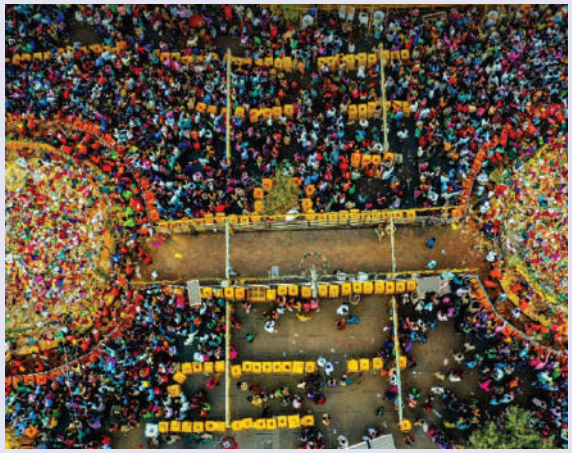

मेदाराम जतारा, जिसे सम्मक्का-सरलम्मा जतारा के नाम से भी जाना जाता है, तेलंगाना का सबसे लोकप्रिय आदिवासी त्योहार है जिसे तेलंगाना के महाकुम्भ के नाम से भी जाना जाता है। कोया जनजाति द्वारा मेदाराम नामक छोटे से वन गाँव में आयोजित होने वाला यह मेला एक द्विवार्षिक उत्सव है।

ये चार दिवसीय मेला माघ के महीने में आयोजित होता है। यह वह समय है जब जनजातीय समुदाय मानते हैं कि देवी सम्मक्का और उनकी बेटी देवी सरलम्मा उनसे मिलने आती हैं। यह मेला उस युद्ध के स्मरण में लगाया जाता है जो देवियों ने राजा के ख़िलाफ़ छेड़ा था। ऐसा बताते हैं की सालो पहले काकतिया राजा ने कोय समुदाय के लोगों पर अन्यायपूर्ण कर लागू किया था। देवी सम्मक्का, उनकी बेटी देवी सरलम्मा और उनके बेटे जम्पन्ना ने इसके विरुद्ध एक युद्ध शुरू किया और काकतिया राजा का वध किया। इस युद्ध के दौरान देवी सरलम्मा की मृत्यु हो गई। जम्पन्ना गम्भीर रूप से घायल हो कर संपंगी वागु (गोदावरी की एक उप-नदी) में जा गिरे। ऐसा माना जाता है कि नदी की धारा उनके खून से लाल हो गई। जम्पन्ना के बलिदान के आदर में वागु का नाम बदल कर जम्पन्ना वागु रखा गया।

दुनिया भर से लगभग 1 करोड़ लोग इस मेले में आते हैं। श्रद्धालु देवियों को अपने वज़न के बराबर गुड़ दान करते हैं और जम्पन्ना वगु में पवित्र स्नान करते हैं।

*दूरदर्शन की टीम ने **टी. राजेंद्रम**, कार्यकारी अधिकारी, मेदाराम जतारा से मेले के बारे में अधिक जानने के लिए बात की:*

"मेदाराम जतारा 12वीं शताब्दी से काकतीय शासन के समय से प्रचलन में है। यह फरवरी के महीने में माघ बुद्ध पूर्णिमा से पहले बुधवार से शनिवार तक चार दिनों तक मनाया जाता है। जतारा को 1994 में एक राज्य उत्सव घोषित किया गया और तब से यह एक भव्य तरह से मनाया जाता है। मेले में न केवल तेलंगाना और पड़ोसी राज्यों- महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, ओडिशा बल्कि देश के अन्य हिस्सों से भी श्रद्धालु आते हैं। इस साल लगभग डेढ़ करोड़ श्रद्धालु इस मेले में आए।"

भारतीय खिलौनों की कहानी

स्वदेशी खिलौना उद्योग का उदय

“भारत के पास टॉयज़ एक्सपोर्ट में पावरहाउस बनने की पूरी क्षमता है। हमारे स्थानीय खिलौने, परम्परा और प्रकृति दोनों के अनुरूप हैं। आज जब बात भारतीय खिलौनों की होती है तो हर तरफ ‘वोकल फॉर लोकल’ की गूँज सुनाई देती है। अब भारत में विदेशों से आने वाले खिलौनों की संख्या निरंतर घट रही है।”

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)

“खिलौना उद्योग में बदलाव लाना कोई बच्चों का खेल नहीं था लेकिन मोदी सरकार का कठिन लक्ष्य हासिल करने का त्रुटिहीन ट्रैक रिकॉर्ड है। हमने खतरनाक एवं निम्न स्तरीय खिलौनों के आयात में अनेक रणनीतिक हस्तक्षेप किए और घरेलू निर्माण को बढ़ावा दिया। सरकार घरेलू उद्योग के साथ भारतीय खिलौना उद्योग में भारी बदलाव कर भारत को वैश्विक खिलौना केंद्र बनाने का प्रयास जारी रखेगी।”

-पीयूष गोयल,
केंद्रीय मंत्री

2020 में दुनिया को कोविड-19 महामारी के अभूतपूर्व संकट का सामना करना पड़ा। ऐसे समय में जब दुनिया का हर देश एक बबल में रहने के लिए मजबूर था, प्रधानमंत्री ने स्थानीय विनिर्माण, स्थानीय हाट-बाज़ारों और आपूर्ति की स्थानीय श्रृंखलाओं के महत्व को पहचाना। उन्होंने जहाँ ‘आत्मनिर्भर भारत’ बनाने का आह्वान किया वहीं नागरिकों से ‘वोकल फॉर लोकल’ होने की भी अपील की।

एक क्षेत्र जिसने आपदा में अवसर देखा और अपने को बदल कर योग्यता सिद्ध की, वह था- भारतीय खिलौना उद्योग। प्रधानमंत्री ने, अगस्त 2020 के अपने ‘मन की बात’ सम्बोधन में, स्वदेशी खिलौना उद्योग को एक नया रूप देने का स्पष्ट आह्वान किया था, और केवल तीन वर्षों में, खिलौनों के आयात में 70 प्रतिशत की कमी आई है जो स्पष्ट रूप से देश में स्वदेशी खिलौनों की बढ़ती लोकप्रियता दर्शाता है। आज खिलौना-क्षेत्र का आयात मुख्य रूप से खिलौनों के कुछ पुर्ज़ों तक सीमित है। खिलौने चाहे लकड़ी के हों या टेराकोटा के, पज़ल्स हों, बोर्ड गेम्स, या वीडियो गेम कंसोल - अब इन सब का डिज़ाइन और निर्माण भारत में किया जा रहा है और उपभोक्ता भी इन्हें खूब पसंद कर रहे हैं।

भारत में खिलौना बनाने का एक समृद्ध इतिहास रहा है जो सिंधु घाटी सभ्यता के समय से चला आ रहा है। शतरंज का खेल पहली बार भारत में ‘चतुरंग’ के रूप में खेला गया था। आधुनिक काल का लूडो, तब ‘पच्चीसी’ के रूप में खेला जाता था। हमारे शास्त्रों में भी, बाल राम और गोपाल कृष्ण के लिए कई खिलौनों का उल्लेख मिलता है। यहाँ तक कि हमारे प्राचीन मंदिरों की दीवारों पर भी खेल-खिलौने उत्कीर्ण हैं।

इस विरासत को आगे बढ़ाते हुए, आज भारत खुद को न केवल खिलौनों के एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित कर रहा है, बल्कि विश्व के खिलौना बाज़ार में भी अपनी पहचान बना चुका है। खिलौनों के निर्यात में पिछले तीन वर्षों में 61.38 प्रतिशत की उल्लेखनीय उछाल देखी गई। भारतीय लोकाचार और जीवन-मूल्यों पर आधारित खिलौने अब दुनिया भर में भेजे जा रहे हैं। भारतीय खिलौना-निर्माता भी दुनिया के अग्रणी खिलौना ब्रांडों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

घरेलू खिलौना उद्योग को सरकार के अनेक हस्तक्षेपों का लाभ मिला है। खिलौनों की प्रत्येक आयातित खेप का अनिवार्य नमूना परीक्षण, खिलौनों पर बुनियादी सीमा शुल्क की 20 से 60 प्रतिशत की वृद्धि, और खिलौना गुणवत्ता नियंत्रण आदेश जिसके अंतर्गत खिलौनों को अनिवार्य भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) सर्टिफ़िकेशन के तहत लाया गया - इन सभी के परिणामस्वरूप खिलौने आयात करने वाली कम्पनियों को देश में ही खिलौने बनाने की सम्भावनाएँ तलाशनी पड़ीं।

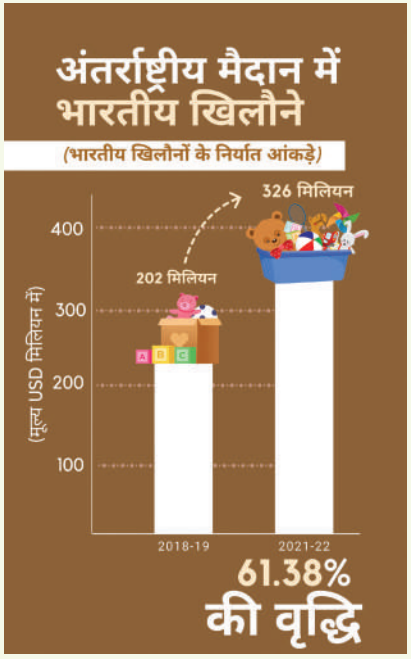

सरकार खिलौनों के लिए एक चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रम (पीएमपी) की भी योजना बना रही है जिसका उद्देश्य स्वदेशी विनिर्माण के लिए एक मज़बूत परिवेश तैयार करना और घरेलू विनिर्माताओं को विदेशी ब्रांडों के साथ समान अवसर प्रदान करना है। स्थानीय खिलौनों को वैश्विक बाज़ार में जगह बनाने में मदद देने के लिए एक नेशनल टॉय ऐक्शन प्लॉन तैयार किया गया है और इस पूरे अभियान में राज्यों को समान भागीदार बनाकर, खिलौना-समूह (टॉय क्लस्टर्स) विकसित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

इन समूहों को डिज़ाइन और नवाचार, प्रौद्योगिकी, विपणन तथा बुनियादी ज़रूरतों के आधार पर मदद भी दी जा रही है। पारम्परिक उद्योगों के पुनरुत्थान की कोष योजना (एसएफयूआरटीआई) के तहत देश भर में कुल 19 खिलौना समूहों का अनुमोदन किया गया है, जिससे ग्यारह हज़ार से अधिक कारीगरों को 55 करोड़ 65 लाख रुपये के व्यय-प्रावधान का लाभ मिला है।

भारत को आत्मनिर्भर खिलौना-आधारित अर्थव्यवस्था (टॉयक्नॉमी) बनाने की दिशा में सरकार के प्रयास यहीं समाप्त नहीं होते। आज देश में राष्ट्रीय स्तर पर टॉय फ़ेयर्स, टॉयकाथॉन और खिलौना व्यापार लीग आयोजित किए जा रहे हैं, जो न केवल स्वदेशी खिलौना उद्योग को बढ़ावा देते हैं, बल्कि युवाओं को नए-नए खिलौने और गेम्स तैयार करने के लिए भी प्रेरित करते हैं

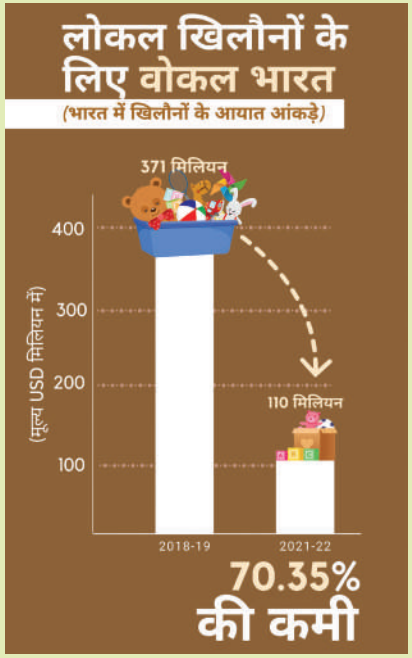

> "हम प्रधानमंत्री के 'मन की बात' में अपनी कम्पनी के उल्लेख के लिए वास्तव में उत्साहित और आभारी हैं। इस कार्यक्रम ने हमें एक ऐसा मंच दिया है जहाँ, पिछले छह वर्षों में हम जो काम कर रहे हैं, उसके लिए हमें पहचाना जा रहा है।"
>
> **-मीता शर्मा गुप्ता**
> संस्थापक, शूमी टॉयज़

जिसका एक उदाहरण दिव्यांग बच्चों के लिए खिलौने हैं।

कई युवा उद्यमी अब पारम्परिक खिलौना निर्माताओं के कार्यबल में शामिल हो रहे हैं और स्वदेशी खिलौनों में निहित क्षमता का दोहन करने की कोशिश कर रहे हैं। आज, भारतीय पौराणिक कथाओं, इतिहास और संस्कृति से सम्बंधित खिलौने बनाए जा रहे हैं। खिलौना क्षेत्र में कई स्टार्ट-अप, देश भर में फैले खिलौना-निर्माता समूहों और खिलौने बनाने वाले हज़ारों छोटे उद्यमों के लिए वरदान बनकर उभरे हैं। चूँकि खिलौना बनाने का काम मानव श्रम-केंद्रित है इसलिए यह उद्योग हज़ारों लोगों के लिए रोज़गार के अवसर मुहैया कराता है।

भारतीय खिलौनों को जो बात दूसरों से अलग करती है वो यह कि ये खिलौने पर्यावरण-अनुकूल हैं, इनमें किसी प्रकार का ख़तरा नहीं है और ये परम्परा तथा प्रकृति दोनों के अनुरूप हैं। चीज़ों का दोबारा उपयोग करना या किसी अन्य रूप में इस्तेमाल करना, भारतीय जीवन शैली का एक हिस्सा रहा है और हमारी यह आदत खिलौनों में भी परिलक्षित होती है। इसके अलावा, भारतीय खिलौनों में मनोरंजन और विज्ञान का समागम है। जैसे लट्टू, बच्चे को आनंद देने के साथ-साथ उसे गुरुत्वाकर्षण और संतुलन के बारे में भी सिखाता है। भारतीय खिलौने कलेक्टिव गेमिंग की अवधारणा को भी बढ़ावा देते हैं। बच्चों में रचनात्मकता पैदा करने और नवाचार सिखाने के संसाधन के रूप में, भारतीय खिलौनों की क्षमता को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में मान्यता मिली, जो खेल और गतिविधि-आधारित सर्वांगीण शिक्षा पर केंद्रित है।

आने वाले दिनों में, भारतीय खिलौना उद्योग देश में विकास और निवेश को बढ़ावा देने में एक अप्रत्याशित लेकिन महत्वपूर्ण घटक बनने जा रहा है। 'मेक इन इंडिया' पहले ही घरेलू खिलौना क्षेत्र के खेल के नियम बदल रहा है और विश्व भर के उपभोक्ता भी अनूठे भारतीय खिलौनों की दुनिया का अनुभव ले सकेंगे।

खिलौना उद्योग में विकास के बारे में अधिक जानने के लिए QR Code स्कैन करें

प्रधानमंत्री का आह्वान

"आइए, हम सब मिलकर भारतीय खिलौनों को दुनिया भर में और अधिक लोकप्रिय बनाएँ। इसके साथ ही, मैं अभिभावकों से भी आग्रह करना चाहूँगा कि वे अधिक-से-अधिक भारतीय खिलौने, पज़ल्स और गेम्स खरीदें।"

भारतीय खिलौनों का बढ़ता खेल मैदान

मनु गुप्ता
निदेशक, प्लेग्रो टॉयज़

माननीय प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में भारतीय खिलौना उद्योग को 'वोकल फॉर लोकल' और भारत को खिलौनों के लिए एक ग्लोबल हब बनाने का आह्वान किया है।

यह ख़ुशी की बात है कि कृष्ण और गणेश-थीम वाले खिलौने अमेरिका और अन्य वैश्विक बाज़ार में बेहद लोकप्रिय हैं। जर्मन बच्चों को भारत में बने रॉकर्स पर अपने घर के आँगन में देखा जा सकता है, और ऑस्ट्रेलियन और अमरीकी बच्चे एक भारतीय ऑटोरिक्शा और राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन के खिलौने से खेलने का आनंद लेते हैं। यह कोई सपना नहीं बल्कि हक़ीक़त है, और यह सब प्रधानमंत्री द्वारा जारी किए गए मज़बूत आह्वान से सम्भव हुआ है।

सरकार के प्रयासों से खिलौना उत्पादकों के लिए स्थिति बेहतर हुई है और देश में सुरक्षित खिलौनों के ब्रांड्स को आगे बढ़ने का मौका मिला है। खिलौनों के लिए गुणवत्ता नियंत्रण आदेश के लागू होने और आयात शुल्क बढ़ाए जाने से भारत के खिलौना निर्माता भी सुरक्षित खिलौने बनाने का महत्व समझने लगे हैं। इससे अब अंतरराष्ट्रीय ग्राहक भी भारत में बने खिलौनों के प्रति आश्वस्त होने लगे हैं।

बढ़ती घरेलू माँग और अंतरराष्ट्रीय बाज़ार, दोनों को समायोजित करने के लिए कई विनिर्माण सुविधाओं ने अपने परिचालन का विस्तार किया है। भारतीय निर्माताओं ने इलेक्ट्रॉनिक खिलौने बनाना शुरू कर दिए हैं, जो पहले केवल चीन द्वारा निर्मित किए जाते थे। राज्य सरकारों की सहायता से और उनकी राज्य खिलौना नीतियों द्वारा निदेशित, कई नए खिलौना क्लस्टर बनाए जा रहे हैं।

टॉय एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया देश भर के पारम्परिक खिलौना समूहों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास कर रहा है। खिलौनों को निर्यात-योग्य बनाने में खिलौना निर्माण सुविधाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। निष्कर्ष आशाजनक हैं, और हब-एंड-स्पोक डिज़ाइन पारम्परिक खिलौना समूहों के लिए कारगर सिद्ध हो रहे हैं। इन उपायों से भारतीय खिलौनों के निर्यात में 61.8% की वृद्धि हुई है।

प्रधानमंत्री ने युवा उद्यमियों और स्टार्ट-अप्स का आह्वान किया है कि वे भारतीय संस्कृति और मूल्यों के अनुरूप खिलौने बनाएँ। युवा पीढ़ी में प्रतिभा को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने टॉयकाथॉन-2021 का भी आयोजन किया और विजेताओं को इस क्षेत्र से सहायता भी प्राप्त हुई।

टॉय बिज़ (2022) और सरकार द्वारा प्रायोजित वर्चुअल नेशनल टॉय फेयर (2021) से निर्माताओं और खुदरा विक्रेताओं के बीच सहयोग बढ़ाने में बहुत मदद मिली हैं। उत्पादों पर रिवर्स इंजीनियरिंग और आपूर्ति श्रृंखलाओं पर बैकवर्ड इंटीग्रेशन खिलौनें व्यापार में भी शुरू हो गए हैं। मौजूदा तकनीकों को संशोधित करने के अलावा, हम उपलब्ध संसाधनों और कच्चे माल के आधार पर नई तकनीकों का निर्माण भी कर रहे हैं।

टॉय एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया की 'वी-केयर' पहल के अंतर्गत हम निर्माताओं को सुरक्षित खिलौने बनाने और उपभोक्ताओं को सुरक्षित खिलौने खरीदने के तरीकों के बारे में प्रशिक्षण दे रहे हैं।

पूर्ण नीतिगत समर्थन के साथ बड़ी इकाइयों की स्थापना की प्रक्रिया शुरू हो गई है, और व्यापार ने महत्वपूर्ण निवेश करने शुरू कर दिए हैं। उत्तर प्रदेश के जेवर में 134 इकाइयों ने 1500 करोड़ के अनुमानित निवेश से कारखाने स्थापित करने का निर्णय लिया है जिनसे लगभग 15,000 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष रोज़गार मिल सकेगा।

खिलौना नीति द्वारा समर्थित, कर्नाटक के कोप्पल में एक घरेलू टैरिफ क्षेत्र के साथ एक खिलौना पार्क और 500 एकड़ से अधिक में एक SEZ स्थापित किया जा रहा है। एमजीए, हैस्ब्रो, डिज़्नी जैसे कई बड़े अंतरराष्ट्रीय ब्रांड वहाँ अपनी उपस्थिति दर्ज़ कर रहे हैं। राऊ-देवास, इंदौर में अन्य 20 इकाइयों को स्थान आवंटित किया गया है। देश की सबसे बड़ी खिलौना फैक्ट्री होसुर, तमिलनाडु में स्थापित की जा रही है।

इन प्रयासों के उन क्षेत्रों में परिणाम मिलने लगे हैं जहाँ बड़े उद्योगों ने निर्माण इकाइयाँ खोलने में दिलचस्पी दिखाई है।

एक नेशनल टॉय ऐक्शन प्लॉन के अंर्तगत इन सभी गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है जिसमें 16 मंत्रालय तथा इस व्यापार के सभी मौजूदा और सम्भावित भागीदारों का सहयोग लिया जा रहा है।

प्रधानमंत्री की खिलौना अर्थव्यवस्था -टॉयक्नॉमी- की दृष्टि को साकारस्वरूप देने के लिए खिलौना निर्माता पूरी निष्टा और समर्पण से प्रयास कर रहे हैं ताकि ये उद्योग खूब फले-फूले।

भारत के अनोखे स्वदेशी खिलौने

कर्नाटक

कर्नाटक के रामनगर ज़िले के विश्व-प्रसिद्ध चन्नापटना खिलौने परंपरागत रूप से, हाथीदांत-लकड़ी से बनाए जाते हैं। प्लास्टिक के खिलौनों के विपरीत, ये खिलौने हानिकारक नहीं होते क्योंकि इन्हें वनस्पति रंगों से रंगा जाता है।

पंजाब

पारंपरिक पंजाबी खिलौनों में छनकना (एक सीटी और घुंघरू वाला खिलौना), घुग्गू (रैटल बॉक्स का पारंपरिक रूप), लट्टू, हंदवाई (रसोई सेट का एक संस्करण), और चरखा (पहिए पर सूत कातने वाली महिला) शामिल हैं।

तमिलनाडु

पल्लंकुझी एक लोकप्रिय पारंपरिक प्राचीन खेल है, जो दो खिलाड़ियों द्वारा खेला जाता है, जिसमें 14 गड्ढों वाले लकड़ी के बोर्ड होते हैं। गड्ढों में कौड़ी के गोले, बीज या छोटे कंकड़ होते हैं जिनका उपयोग काउंटर के रूप में किया जाता है।

पश्चिम बंगाल

चमकीले रंगों से रंगी हुई, नाटुनग्राम गुड़िया पश्चिम बंगाल के बर्धमान ज़िले के प्रतिष्ठित हस्तशिल्पकारों द्वारा बनाए गए 'लकड़ी के उल्लू' होते हैं। लकड़ी के एक टुकड़े से छेनी वाली ये गुड़िया सांस्कृतिक रूप से भी प्रासंगिक हैं क्योंकि ये देवी लक्ष्मी से जुड़ी हुई है।

आंध्र प्रदेश

विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश के कोंडापल्ली खिलौने 'टेला पोनिकी' नामक नर्म लकड़ी से बनाए जाते हैं। प्रत्येक खिलौना कई छोटे टुकड़ों से बना होता है, और फिर इमली के बीज से बने गोंद से चिपकाया जाता है।

बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा पर केंद्रित शुमी टॉयज़

प्लेटाइम को विकास के अनुकूल और बच्चों के लिए सुरक्षित बनाने के मिशन के साथ, बेंगलुरु स्थित शूमी टॉयज़ की स्थापना मीता शर्मा गुप्ता ने 2016 में की थी। कम्पनी 0 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए आकर्षक, ओपन-एंडेड लकड़ी के खिलौने, और ऐक्टिविटी बॉक्स डिज़ाइन करती है।

हमारी दूरदर्शन टीम ने इस बारे में शूमी की संस्थापक ***मीता शर्मा गुप्ता*** *से बात की।*

"हर शूमी खिलौना स्थानीय कारीगरों द्वारा प्राकृतिक सामग्री और गैर-विषैले रंगों का उपयोग करके बनाया जाता है। हम सुरक्षित, टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल खिलौनों का उपयोग करके बच्चों के लिए प्रारम्भिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हैं।" शूमी पूरे भारत में खिलौने बेचता है और वैश्विक बाज़ार में भी अपनी छाप छोड़ने के लिए तत्पर है। "शूमी एक मेड इन इंडिया ब्रांड है। हम भारत के कई कारीगरों के साथ काम करते हैं। हमारे सभी उत्पाद प्राकृतिक सामग्री और गैर-विषैले पेंट का उपयोग करके बनाए गए हैं, जो उन्हें बच्चों के लिए सुरक्षित बनाते हैं। यह खिलौने भारतीय और अंतरराष्ट्रीय खिलौनों के गुणवत्ता मानकों द्वारा प्रमाणित हैं।"

"शूमी के उत्पादों के पीछे मुख्य दर्शन यह है कि खेल बच्चे की विकास यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा हैं ख़ासकर शुरुआती वर्षों में। और हम इसे बच्चों के लिए यथासम्भव सुरक्षित बनाना चाहते हैं ताकि वे खेल के माध्यम से अपने विकास के वर्षों में सभी सही कौशल विकसित कर सकें, जो कि मेरे हिसाब से सबसे स्वाभाविक तरीका है।"

"हम प्रधानमंत्री के 'मन की बात' में अपनी कम्पनी के उल्लेख के लिए वास्तव में उत्साहित और आभारी हैं। इस कार्यक्रम ने हमें एक ऐसा मंच दिया है जहाँ, पिछले छह वर्षों में हम जो काम कर रहे हैं, उसके लिए हमें पहचाना जा रहा है।"

ऑगमेंटेड रिएलिटी के साथ लर्निंग को मज़ेदार बना रहा है ARKidzoo

ARKidzoo एक ऐसा ब्रांड है जो बच्चों के लिए इंटरैक्टिव और मज़ेदार लर्निंग उत्पाद बनाता है, जो पारम्परिक शिक्षा और नवीन तकनीक, यानी ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) का एक अनोखा मेल है।

*हमारी दूरदर्शन टीम ने इस स्टार्ट-अप के सह-संस्थापक **धर्मेश गोहिल** और **काजल गोहिल** से बात की।*

"हमने पारम्परिक खिलौनों को एक डिजिटल मोड़ दिया है। उदाहरण के लिए, हमारा 'हाथी' कार्ड सामान्य 2-डी फ्लैश कार्ड के रूप में दिखाई दे सकता है। लेकिन फ़ोन और हमारे ऐप का उपयोग करके, बच्चे घर बैठे ही, AR के माध्यम से यह देख सकते हैं कि जानवर वास्तविक जीवन में कैसा दिखता और सुनाई देता है। इसके अलावा, उन्हें यह भी सीखने को मिलता है कि किसी विशेष शब्द का उच्चारण कैसे किया जाता है जो उनकी शब्दावली को बढ़ाने में सहायता करता है," धर्मेश ने कहा।

इस पर काजल ने बताया, "ARKidzoo इन कार्ड्स को बनाने के लिए रीसाइकल्ड उत्पादों और फ़ूड-ग्रेड स्याही का उपयोग करता है, जो बच्चों के लिए सुरक्षित हैं। साथ ही, बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, हमने अपने कार्ड्स के लिए एक गोल आकार चुना। कई माता-पिता शुरू में हमारे प्रोडक्ट्स का उपयोग करने के लिए अनिच्छुक थे क्योंकि इसमें मोबाइल फ़ोन शामिल हैं लेकिन अंततः, उन्होंने महसूस किया कि बच्चे इन दिनों वैसे भी फ़ोन का उपयोग कर रहे हैं और ARKidzoo के प्रोडक्ट्स अन्य गैर-शैक्षिक सामग्री के लिए एक बढ़िया प्रतिस्थापन हो सकते हैं। और बच्चे कम-से-कम इससे कुछ सीख सकते हैं।"

धर्मेश ने आगे कहा, "2018 में वाइब्रेंट गुजरात समिट के दौरान दूसरे देशों के बहुत सारे लोग, और ख़ासकर विदेश में रहने वाले भारतीय, हमारे उत्पादों से आकर्षित हुए थे। उन्हीं के फ़ीडबैक ने हमें अपने प्रोडक्ट्स को क्षेत्रीय भाषाओं में भी विकसित करने के लिए प्रेरित किया।"

"'मन की बात' में हमारे स्टार्ट-अप का उल्लेख करने के लिए प्रधानमंत्री के हम आभारी हैं। अपनी कम्पनी का नाम सुनकर हम अभिभूत हो गए। एपिसोड के बाद, कुछ ही दिनों में हमारी बिक्री दोगुनी हो गई है। पहले हमें ग्राहकों की तलाश करनी पड़ती थी। अब ग्राहक खुद हमारे पास आ रहे हैं।"

"हमने पूरे भारत में 40 से अधिक प्री-स्कूलों के साथ कोलैबोरेट किया है। हमने अपने उत्पादों को दुनिया भर के 16 देशों में भी पहुँचाया है। और 'मन की बात' में हमारे उल्लेख के बाद, भारत और अन्य देशों के कई लोग सहयोग के लिए हम से सम्पर्क कर रहे हैं।"

STEAM लर्निंग को आसान बना रहा है फ़नवेन्शन

फ़नवेंशन एक्टिविटी किट बनाता है, जो बच्चों को STEAM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, कला और गणित) अवधारणाओं का सीखने में मदद करती है। खिलौनों के निर्माण के लिए DIY किट बच्चों को एक विशेष खिलौने की मौलिक अवधारणा और कार्य तंत्र को सीखने और खोजने में भी मदद करती है।

*स्टार्ट-अप के सह-संस्थापक और सीईओ, **मिलिंद वडनेरे** ने हमारी दूरदर्शन टीम से बात की।*

"हमने (मिलिंद और उनके भाई और सह-संस्थापक कमलेश वडनेरे) अपने घर से लगभग पाँच से छह साल पहले फनवेंशन शुरू किया था। हमने महसूस किया कि बाज़ार में बच्चों के लिए बहुत से इनोवेटिव खिलौने उपलब्ध नहीं हैं। मैंने आईटी इंडस्ट्री में 12 वर्षों तक काम किया है और मेरे भाई को डिज़ाइनिंग और डिजिटल कला का अनुभव था। दोनों को मिलाकर, हमने सोचा कि हम बच्चों के लिए STEAM कॉन्सेप्ट्स के शैक्षिक खिलौने बना सकते हैं।

जब हमने कम्पनी शुरू की थी, तो हमें ग्राहकों से शानदार प्रतिक्रिया मिली थी। दुर्भाग्य से, उसके तुरंत बाद मेरे भाई का कैंसर के कारण निधन हो गया। तब मैंने अपनी आईटी नौकरी छोड़ने का फैसला किया और उनके इस सपने को पूरा करने के लिए ख़ुद को पूरी तरह से समर्पित कर दिया।

फ़नवेंशन की ताकत STEAM-आधारित शैक्षिक खिलौने हैं और हमारे पास प्रत्येक स्ट्रीम के लिए अलग-अलग तरह के प्रोडक्ट्स हैं। उदाहरण के लिए, हमारी ड्रिप सिंचाई गतिविधि किट एक बच्चे को अवधारणा के साथ-साथ जल प्रबंधन के बारे में सीखने में मदद कर सकती है। पिछले पाँच वर्षों में, हमने सौ से अधिक उत्पाद लॉन्च किए हैं। हमने एक नया ब्रांड भी शुरू किया है जिसके तहत हम पज़ल्स और रेडी-टू-प्ले एक्टिविटीज़ प्रदान करते हैं।

हमारी अब तक की यात्रा में, स्टार्ट-अप इंडिया पहल ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके द्वारा हमें कई प्लेटफॉर्म मिले जहाँ हम अपने प्रोडक्ट्स प्रदर्शित कर सके और अधिक-से-अधिक ग्राहकों तक पहुँच सके। और अब अपने 'मन की बात' सम्बोधन में हमारा ज़िक्र कर प्रधानमंत्री ने हमारे आगे के सफ़र को आसान बना दिया है। अब, हम अपने उत्पादों के साथ स्कूलों और गाँवों तक भी पहुँच सकते हैं।"

बढ़ते भारतीय खिलौना उद्योग पर उद्योग जगत के धुरंधरों की प्रतिक्रिया

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में भारत को 'टॉयकोनॉमी' की ओर ले जाने में भारतीय उद्यमियों और स्टार्टअप्स के प्रयासों की सराहना की। हमारी दूरदर्शन टीम ने इस बारे में अधिक जानने के लिए भारतीय खिलौना उद्योग के धुरंधरों के साथ बातचीत की।

"हम 2014-15 से खिलौना उद्योग में हैं, लेकिन पिछले 2-3 वर्षों में वैश्विक बाज़ार के लिए खिलौनों के निर्माण में वृद्धि तेज़ी से हुई है, खासकर कोविड-19 के दौरान। इस क्षेत्र में विशेष रूप से महिलाओं के लिए रोज़गार पैदा करने की बड़ी क्षमता है। यहाँ तक कि भारतीय खिलौनों का निर्यात भी बढ़ रहा है। सरकार द्वारा दिया गया समर्थन और प्रोत्साहन भी इस क्षेत्र को स्थापित करने में मदद कर रहा है। भारत के पास दुनिया को देने के लिए बहुत कुछ है। खिलौना सिर्फ़ एक खेल की चीज़ नहीं है बल्कि एक इंजीनियरिंग उत्पाद है।"

-श्रीवत्स एस जी, सीओओ, माइक्रोप्लास्टिक्स

"अमरीका और यूरोपीय संघ जैसे विकसित बाज़ारों में खिलौनों की माँग स्थिर है। इस बाज़ार की विस्फोटक वृद्धि की सम्भावना भारत जैसी विस्तारित अर्थव्यवस्थाओं

में है। मेक इन इंडिया एक नारा नहीं है, यह एक विकल्प है, हमारे भाग्य को नियंत्रित करने का निमित्त है। सरकार इस सेक्टर को बढ़ावा देने के लिए कदम उठा रही है। आवश्यक है ऐसे ब्रांड्स की परिकल्पना करना जो 'छोटा भीम' जैसे खिलौनों के समान बच्चों में प्रसिद्ध हों और उन्हें किफायती दाम में निर्मित कर विश्व-स्तर पर वितरित किया जा सके। 'वोकल फॉर लोकल' स्थानीय आइकन और क्षमताओं को पहचान रहा है और स्थानीय बाज़ारों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ले जा रहा है। हमें उद्यमियों और सरकार को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी अवसर पैदा करने के लिए निवेश और प्रोत्साहन के साथ मिलकर काम करने की ज़रूरत है।"

-अमित चक्रवर्ती, प्रेसिडेंट, टॉयज बिजनेस सेगमेंट, ऐक्यूस

"भारतीय खिलौना बाज़ार को अपनी क्षमता का एहसास हो रहा है। सरकार की हालिया नीतिगत पहलों के लिए धन्यवाद, जो घरेलू खिलौना निर्माण उद्योग के लिए बेहद फायदेमंद रही हैं। 2020 के बजट के साथ आने वाले कस्टम ड्यूटी में वृद्धि, जनवरी 2021 से शुरू हुए आयात पर बीआईएस नियमों ने भारतीय खिलौना उद्योग की मदद की है। आज, कई अंतरराष्ट्रीय खिलौना कम्पनियाँ भारत से जुड़ रही हैं और भारत का व्यापार समय के साथ बढ़ने के लिए बाध्य है। यह देखकर खुशी होती है कि भारतीय ब्रांड धीरे-धीरे अंतरराष्ट्रीय खुदरा दुकानों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने लगे हैं। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि आने वाले वर्षों में, भारत के पास अंतरराष्ट्रीय खिलौना बाज़ार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होगा जो लगभग 90 बिलियन डॉलर है।"

-आर जेसवंत, सीईओ, फनस्कूल

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

shumee
@shumeetoys

Proud moment for our team to have the prime minister endorse our eco-friendly toys!

We are grateful to him.

#MakeInIndia #VocalForLocal

Narendra Modi @narendramodi · Jul 31

In one of the previous #MannKiBaat programmes, we had discussed aspects relating to making India a powerhouse of toy manufacturing. I'm glad to share that thanks to our citizens, this vision is being realised.

Ashwini Vaishnaw
@AshwiniVaishnaw

जुलाई में एक बहुत ही रोचक प्रयास हुआ है जिसका नाम है- आज़ादी की रेलगाड़ी और रेलवे स्टेशन। इस प्रयास का लक्ष्य है कि लोग आज़ादी की लड़ाई में भारतीय रेल की भूमिका को जानें: पीएम @narendramodi जी
#MannKiBaat

Translate Tweet

11:56 AM · Jul 31, 2022 · Twitter for Android

Devendra Fadnavis
@Dev_Fadnavis

So good to hear about the treasures of traditions of tribal community !
Watch to know what is 'Sammakka Saralamma Jatara' !
#MannKiBaat @AmritMahotsav #NarendraModi #India @narendramodi

4:14 PM · Jul 31, 2022 · Twitter Media Studio

ARKidzoo
440 followers
5d

+ Follow

The PMO shree Narendra Modiji promoted ARKidzoo in Maan ki baat (31 july 2022). A moment of great pride for the entire team... Everyone at Arkidzoo would like to express their gratitude to everyone who has helped us reach new height. ...see more

24 6 comments

Amit Shah
@AmitShah

#HarGharTiranga अभियान को जनआंदोलन बनाने के लिए आज @narendramodi जी ने #MannKiBaat कार्यक्रम में सभी देशवासियों से 2 से 15 अगस्त तक अपने Social Media Profile में तिरंगा लगाने का आवाहन किया।

सभी अपनी DP में तिरंगा लगाकर दूसरों को भी इस अभियान से जुड़ने के लिए प्रेरित करें।

Translate Tweet

14:02 · 31 Jul 22 · Twitter for iPhone

Subhash Kamboj
31 July at 17:15

प्रधानमंत्री द्वारा आज मन की बात में मेरे काम की तारीफ की और मेरी कामयाबी की छोटी सी कहानी बतलाई।

384 126 comments 91 shares

Dr Jitendra Singh
@DrJitendraSingh

पीएम श्री @narendramodi जी ने #Jammu के पल्ली गाँव में विनोद कुमार जी का उल्लेख किया उन्होंने कहा कि, वो भी 1500 से ज्यादा कॉलोनियों में मधुमक्खी पालन कर रहे हैं। उन्होंने पिछले साल रानी मक्खी पालन का प्रशिक्षण लिया है। इस काम से वो सालाना 15-20 लाख कमा रहे हैं।
#MannKiBaat

Translate Tweet

11:35 AM · Jul 31, 2022 · Twitter Web App

Syed Shahnawaz Hussain
@ShahnawazBJP

Classroom हो या खेल का मैदान, आज हमारे युवा, हर क्षेत्र में, देश को गौरवान्वित कर रहे हैं।

Chennai में 44वें Chess Olympiad की मेजबानी करना भी भारत के लिए बड़े ही सम्मान की बात है।

- पीएम श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Translate Tweet

2:30 PM · Jul 31, 2022 · Twitter Web App

Jyotiraditya M. Scindia
@JM_Scindia

विश्व में आयुर्वेद का बढ़ता प्रभाव,भारतीय चिकित्सा पद्धति की बढ़ती साख का शुभ संकेत है। ग्लोबल आयुष निवेश और नवाचार शिखर सम्मेलन में 10 हज़ार करोड़ का इन्वेस्टमेंट प्रस्ताव इस बात का सूचक है कि भारत की पारंपरिक स्वास्थ्य प्रणाली अब विश्व में अपना स्थान बना चुकी है।#mannkibaat

Translate Tweet

4:07 PM · Jul 31, 2022 · Twitter for iPhone

Nirmala Sitharaman
@nsitharaman

Let each home hoist the tricolour 🇮🇳 from 13- 15 August 2022 to mark Azadi ka Amrit Mahotsav.

Under the Azadi Ka Amrit Mahotsav, from the 13th to the 15th of August, a special movement – 'Har Ghar Tiranga' is being organised.
twitter.com/PMOIndia/statu...

via NaMo App

Piyush Goyal
@PiyushGoyal

हमारे Youngsters, Start-ups और Entrepreneurs के बूते हमारी Toy Industry ने जो कर दिखाया है, जो सफलताएं हासिल की हैं, उसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी।

आज, जब भारतीय खिलौनों की बात होती है, तो हर तरफ, Vocal for Local की ही गूंज सुनाई दे रही है: PM @NarendraModi जी

Bhupender Yadav
@byadavbjp

जुलाई में Indian Virtual Herbarium को लॉन्च किया गया। यह इस बात का उदाहरण है कि कैसे हम Digital World का इस्तेमाल अपनी जड़ों से जुड़ने में कर सकते हैं।

Herbarium preserved plants की digital images का संग्रह है जो वेब पे freely available है: PM श्री @narendramodi

#MannKiBaat

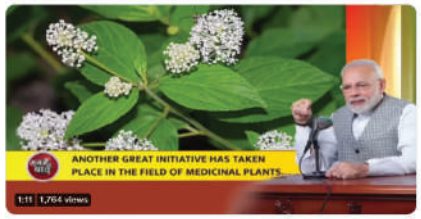

12:16 PM · Jul 31, 2022 · Twitter Web App

Shivraj Singh Chouhan
@ChouhanShivraj

आज माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने #MannKiBaat के माध्यम से अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की।

प्रधानमंत्री जी ने मध्यप्रदेश के भगोरिया मेले के विविध रंगों से देश को परिचित कराकर हमारा मनोबल बढ़ाया है। निःसंदेह, इससे भगोरिया मेले को एक नई पहचान मिलेगी।

Translate Tweet

1:41 PM · Jul 31, 2022 · Twitter Web App

Milind Vadnere • 3rd+
CEO at Funvention & Eduketive
1w •

+ Follow

An extremely proud moment for #Funvention - India's Prime Minister Shri Narendra Modi ji has recognized our Pune-based startup Funvention's unique efforts to introduce science & technology to kids through educational toys under Make In India during Mann ki Baat on July 31st, 2022 #mannkibaat #pmnarendramodi #makeinindia #startupindia #vocalforlocal #startup #pune #stemeducation

Funvention Recognised by PM Shri Narendra Modi Ji in Mann Ki Baat 31 J...
youtube.com

62 · 10 comments

Smriti Z Irani
@smritiirani

भारत इस स्वतंत्रता दिवस पर आजादी के 75 वर्ष पूरा करने जा रहा है। इस ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बनने जा रहे देशवासियों हेतु यह एक सौभाग्य है।

PM @narendramodi जी ने #MannKiBaat में महापुरुषों को याद कर श्रद्धांजलि अर्पित की जिन्होंने अपने त्याग व समर्पण से इस क्षण को संभव बनाया है।

Translate Tweet

6:33 PM · Jul 31, 2022 · Twitter for iPhone

Dr Tamilisai Soundararajan
@DrTamilisaiGuv

Thank our Honb @PMOIndia for highlighting fairs associated with tribal culture #SamakkaSaralamma Jatra in Medaram Dt #Telangana, in his 91 st monthly radio program #MannKiBaat.

Mother daughter duo Samakka & Saralamma fought against unfair laws of then powerfull kakitaya rulers.

PMO India and 9 others

9:51 AM · Aug 1, 2022 · Twitter for Android

समाजमाध्यमे 'तिरंगा' अभियान चान प्रधानमंत्री

Azadi celebration turning into mass movement: Modi

PM URGES PEOPLE TO VISIT FAIRS ACROSS COUNTRY

New Delhi: Highlighting the importance of fairs that helps people aware of the cultural heritage of the country, PM Modi on Sunday urged citizens to visit these places and asserted fairs strengthen the spirit of 'Ek Bharat, Shreshtha Bharat'. PM Narendra Modi said there are many traditional fairs of tribal societies in different states in the country and these fairs are associated with tribal culture and history.

20ರಿಂದ 15ರವರೆಗೆ ರಾಷ್ಟ್ರಧ್ವಜ ಚಿತ್ರವನ್ನು ಪ್ರೊಫೈಲ್ ಫೋಟೊ ಆಗಿ ಬಳಸಲು ಮೋದಿ ಕರೆ

ಸಾಮಾಜಿಕ ಜಾಲತಾಣಗಳಲ್ಲೂ ತಿರಂಗಾ

Build India of freedom fighters' dreams: Modi

Biggest message from *Azadi Ka Amrit Mahotsav* events is for countrymen to follow their duty with full devotion, says PM

> Only then will we be able to fulfil the dream of those countless freedom fighters... and to build the India of their dreams. That is why this *amrit kaal* of our next 25 years is *kartavya kaal*, a period of duty for every countryman.
> NARENDRA MODI, Prime Minister

Join the Honey Mission: PM message to youth

TIMES NEWS NETWORK

New Delhi: Prime Minister Narendra Modi on Sunday urged the youth to take up honey production as he highlighted success of various farmers and increase in its export in recent years. He also said how the efforts of youngsters, startups and entrepreneurs have resulted in reduction of import of toys while their export from India has increased by more than six times in the recent years.

In his radio address to the nation, the PM said India is becoming a big honey producer as he mentioned the success stories of four bee farmers, including a B Tech pass out from Gorakhpur in Uttar Pradesh who pursued this instead of a job.

"The country started campaigns like the National Beekeeping and Honey Mission, farmers worked hard, and the sweetness of our honey started reaching across the world. There are still huge possibilities in this field. I would like our youth to join these opportunities and take advantage of them and realize new possibilities," Modi said.

Official data showed honey production rose nearly 38% between 2013-14 and 2019-20, when it was pegged at 1.2 lakh tonnes, while exports more than doubled to almost 60,000 tonnes. This means nearly half the honey produced in the country is shipped out of the country. Natural honey exports were estimated at Rs 716 crore during the year 2020-21, Apeda said, with the US, Saudi Arabia, UAE, Bangladesh and Canada being the top destinations.

On the import and export of toys, the PM said the number of toys coming from abroad to India is continuously decreasing. "Earlier, where toys worth more than Rs 3,000 crore used to come from outside, now their import has reduced by 70% and it is a matter of joy that during this period, India has exported toys worth more than Rs 2,600 crore to foreign countries, whereas earlier, only toys worth Rs 300-400 crore used to go out of India."

In his radio address Mann Ki Baat, the PM also said how the efforts of youngsters, startups and entrepreneurs have resulted in reduction of import of toys while their export from India has increased by more than six times in the recent years

जीवन में उल्लास भरता है भगोरिया: मोदी

मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने किया मप्र का जिक्र

जन, मन दोनों को जोड़ते हैं मेले

तिरंगे को बनाएं... पेज-7

MANN KI BAAT: AZADI KA AMRIT MAHOTSAV CELEBRATIONS

Use Tricolour on social media, hoist flag at homes, says PM

PM: Make 'Har ghar Tiranga' a success

Modi pays homage to freedom fighters ahead of I-Day

Modi on 'Mann ki Baat': Import of toys down 70%, exports rise

Urges people to hoist Tricolour to mark Independence Day

दुनियाभर में आयुर्वेद के प्रति बढ़ रहा आकर्षण

ಮೋದಿ ಮನ್‌ಕಿಬಾತ್‌ನಲ್ಲಿ ಕರ್ನಾಟಕಕ್ಕೆ ಶಹಬ್ಬಾಸ್

ರಾಜ್ಯದ ಸಾಧನೆಗೆ ಪ್ರಧಾನಿ ಶ್ಲಾಘನೆ ಮೆಚ್ಚುಗೆ

ಕನ್ನಡಪ್ರಭ ಪ್ರಶಸ್ತಿ ಗೆದ್ದ ಶಿರಸಿಯ ಜೇನು ಕೃಷಿಕನಿಗೆ ಶ್ಲಾಘನೆ

ಜಗತ್ತಿನ ಗಮನ ಸೆಳೆದ ಬೆಂಗಳೂರಿನ ಶುಮಿ ಟಾಯ್ಸ್

ಅಮೃತ ಭಾರತಿಗೆ ಕನ್ನಡದ ಆರತಿ ವಿಶಿಷ್ಟ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮ

വീടുകളിൽ ദേശീയ പതാക, 2 ആഴ്ച പ്രൊഫൈൽ ചിത്രം

സ്വാതന്ത്ര്യത്തിന്റെ 75-ാം വാർഷികം: ആഹ്വാനവുമായി മോദി

പ്രൊഫൈൽ നാളെ മുതൽ

സ്വാതന്ത്ര്യത്തിന്റെ ട്രെയിൻ

Our fight is still on: PM Modi urges citizens to adhere to COVID-19 protocols

Congratulates students for commendable results in Class X, XII exams

પહેલાં ત્રણ હજાર કરોડ રૂપિયા થી પણ વધુ નાં રમકડાં બહારથી આવતાં હતાં, ત્યારે આજે તેની આયાત ૭૦ ટકા સુધી ઘટી ગઈ છે : વડાપ્રધાન મોદી

प्रधानमंत्री ने मन की बात कार्यक्रम में आजादी के आंदोलन में आहुति देने वाले योद्धाओं को नमन किया

जन आंदोलन का रूप ले रहा अमृत महोत्सव : मोदी

ऐतिहासिक रेलवे स्टेशनों का दौरा कर उनके महत्व को समझें

दरेक घर पर तिरंगो लहेरावा पीएम मोदीनी मन की बातमां अपील

દેશમાં આઝાદીનો અમૃત મહોત્સવ જનઆંદોલન બની ગયો છે : મોદી

मोदी बोले- घर पर तिरंगा जरूर फहराएं

आजादी की 75वीं सालगिरह मनाना सौभाग्य की बात; शहीद उधम सिंह को नमन किया

मन की बात

प्रधानमंत्री ने अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम में देशवासियों को किया संबोधित

शहद से आ रही है किसानों के जीवन में मिठास : मोदी

बढ़ रहा है भारतीय खिलौनों का निर्यात

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में निर्मित खिलौनों को प्राथमिकता देने का आह्वान करते हुए कहा कि परंपरागत भारतीय खिलौनों का निर्यात बढ़ रहा है। मोदी ने कहा कि भारत के पास खिलौना निर्यात में शक्तिपुंज बनने की पूरी क्षमता है। भारत के स्थानीय खिलौने परंपरा और प्रकृति, दोनों के अनुरूप और पर्यावरण के अनुकूल होते हैं। उन्होंने कहा कि युवा उद्यमियों और स्टार्टअप्स की बदौलत भारतीय खिलौनों की धूम दुनियाभर में हो रही है। उन्होंने कहा कि भारत में विदेश से आने वाले खिलौनों की संख्या लगातार कम हो रही है। पहले जहां तीन हजार करोड़ रुपए से ज्यादा के खिलौने बाहर से आते थे, वहीं अब इनका आयात 70 प्रतिशत तक घट गया है।

स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े रेलवे स्टेशनों को दौरा करें : मोदी

नई दिल्ली (एसएनबी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को कहा कि देश में अनेक ऐसे रेलवे स्टेशन है, जो स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास से जुड़े है। उन्होंने लोगों से ऐसे नजदीकी रेलवे स्टेशन पर जाने और स्वतंत्रता आंदोलन में उनके महत्व को समझने का आग्रह किया।

उन्होंने अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात में कहा कि आजादी की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर मनाए जा रहे 'अमृत महोत्सव' के तहत रेलवे ने 18 जुलाई से 23 जुलाई के बीच 'आजादी की रेल गाड़ी और रेलवे स्टेशन' सप्ताह मनाया। इसमें 27 रेलगाड़ियों और देश के 24 राज्यों के 75 रेलवे स्टेशनों को शामिल किया गया था। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस प्रयास का लक्ष्य है कि लोग आजादी की लड़ाई में भारतीय रेल की भूमिका को जानें।

पंतप्रधान मोदी : अमृत महोत्सवात उत्साहाने सहभागी होण्याचे आवाहन

पुढील २५ वर्षे हा कर्तव्यकाळ

PM urges people to visit historical rly stations like Vanchi Maniyachi

New Delhi, July 31: Prime Minister Narendra Modi on Sunday said many railway stations in the country are rich in history and urged people to visit such stations in their vicinity to know about their significance in the freedom struggle. The railways observed a week of 'Azadi ki Rail Gadi', from July 18-23, through 27 trains and 75 railway stations across 24 states that are linked to the Indian freedom struggle.

In these 75 stations, apart from the usual decorations of lights and other ornamentations, events such as street plays in local language, light-and-sound shows, display of patriotic films and songs were also played.

"These 75 stations are being decorated very ornately. Many types of programmes are also being organised in these stations. You should also take out time to visit one such historical station in your vicinity. You will get to know in detail about pages from the history of the freedom movement that you have not been aware of.

"I urge the students of school, and the teachers to take the small children of their school to the nearby station and narrate the whole chain of events to those children," said Modi in his Mann Ki Baat radio broadcast.

Modi also referred to the Gomoh Junction in Jharkhand which is now officially known as Netaji Subhas Chandra Bose Junction Gomoh and explained why it has been renamed.

"Netaji Subhas was successful in dodging British officers by boarding the Kalka Mail. All of you must have heard the name of Kakori Railway Station near Lucknow. The names of brave-hearts like Ram Prasad Bismil and Ashfaq Ullah Khan are associated with this station.

"The brave revolutionaries had displayed their might to the British by looting the treasury of the British being carried by train. Whenever you talk to the people of Tamil Nadu, you will get to know about Vanchi Maniyachchi Junction in Thoothukudi district. This station is named after Tamil freedom fighter Vanchinathan ji. This is the same place where Vanchi, 25 years of age then, had punished one British collector for his actions," he said.

During the celebrations organised by the Indian Railways, among the 27 trains identified, some were linked to Mahatma Gandhi - the Ahimsa Express which runs between Ahmedabad and Pune, Ashram Express (Ahmedabad - Delhi); some to famous poet Rabindranath Tagore who wrote songs hailing the Indian independence movement and raising the spirits of the freedom fighters like the Shantiniketan Express (Howrah - Bolpur), Gitanjali Express (Mumbai CST - Howrah) and Gurudev Express (Nagercoil - Shalimar) while some other linked to Netaji Subhash Bose like Netaji Express (Howrah - Kalka) and Azad Hind Express (Pune - Howrah).

Some of the stations include Cuttack (Netaji Subhash Chandra Bose's birth place), Puri (Chakhi Khuntia and Utkalmani Gopabandhu Das), Sambalpur (Veer Surendra Sai), Dhenkanal (Baji Rout). During the event, freedom fighters and their families were also present. —PTI

ମନ୍ କି ବାତ୍‌ରେ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ନିବେଦନ

ସୋସିଆଲ ମିଡିଆ ପ୍ରୋଫାଇଲ ଛବି 'ତ୍ରିରଙ୍ଗା' ରଖ

अगले 25 साल कर्तव्यकाल की तरह मनाएं : नरेंद्र मोदी

दुनिया में बढ़ रही है आयुष उत्पादों की मांग

भारत दुनिया में खिलौने के निर्यात का बनता जा रहा पॉवर हाउस

एजेंसी • नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को आकाशवाणी के अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात में लोगों से अपने सोशल प्रोफाइल और घर के बाहर तिरंगा लगाने की अपील की। उन्होंने कहा कि आप चाहें तो 2 से 15 अगस्त तक अपनी सोशल प्रोफाइल पर तिरंगे को लगा सकते हैं। इसके अलावा 13 से 15 अगस्त तक अपने घरों में तिरंगा फहराकर इस हर घर तिरंगा अभियान का हिस्सा बनने की अपील की। इस मौके पर मोदी ने खिलौना उद्योग की जमकर तारीफ करते हुए कहा कि भारत दुनिया में खिलौनों के निर्यात का पॉवर हाउस बनता जा रहा है। उन्होंने कहा कि पहले भारत सिर्फ 300-400 करोड़ रुपए के खिलौनों का निर्यात करता था, जो आज बढ़कर 2600 करोड़ रुपए पर पहुंच गया है।

अपील: बच्चों के लिए दिलाएं भारतीय खिलौने

इस मौके पर पीएम मोदी ने कहा कि भारत के खिलौने दुनिया भर में बिक रहे हैं। भारत के खिलौना निर्माता दुनिया के प्रमुख ब्रांडों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। इसके साथ ही पीएम मोदी ने अपील करते हुए कहा कि आइए हम सब मिलकर भारतीय खिलौनों को पूरी दुनिया में लोकप्रिय बनाएं। इसके साथ ही मैं अभिभावकों से भी आग्रह करूंगा कि वे ज्यादा से ज्यादा भारतीय खिलौने, पजल और खेल खरीदें।

इतिहास बताने बच्चों को लेकर जाएं रेलवे स्टेशन

मोदी ने कहा, देश के अनेक रेलवे स्टेशन ऐसे हैं, जो इतिहास से जुड़े हैं। झारखंड के गोमो जंक्शन को नेताजी सुभाषचंद्र बोस जंक्शन के नाम से जाना जाता है, क्योंकि कालका मेल में सवार होकर वह ब्रिटिश अफसरों को चकमा देकर भागे थे। काकोरी स्टेशन को लेकर उन्होंने बताया क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्लाह खान के कारण काकोरी रेलवे स्टेशन चर्चा में आया। उन्होंने बताया देशभर के 24 राज्यों के 75 स्टेशनों की पहचान की गई। यहां इतिहास के बारे में जानकारी मिलेगी। पीएम ने स्कूल के बच्चों से आग्रह किया कि वो स्टेशन पर जरूर जाएं।

Modi remembers Tirot Sing during *Mann Ki Baat*

Our Correspondent

New Delhi

Prime Minister Narendra Modi, on Sunday, remembered U Tirot Sing Syiem on his death anniversary, and also showered praise on Meghalayans for participating in the Azadi ka Amrit Mahotsav, during his monthly 'Mann Ki Baat' programme.

"I am very happy to see that the Azadi Ka Amrit Mahotsav is taking the form of a mass movement. People from all walks of life and from every section of the society are participating in different programmes connected with it. One such event took place in Meghalaya earlier this month. People remembered the brave warrior of Meghalaya U Tirot Sing on his death anniversary. Tirot Sing ji fiercely opposed the British conspiracy to control the Khasi Hills and destroy the culture there," PM Modi said during the 91st episode. He also said that many artists gave beautiful performances during the programme.

> "Tirot Singji fiercely opposed the British conspiracy to control the Khasi Hills and destroy the culture there."
>
> Narendra Modi, Prime Minister

"They made history come alive. A carnival was also organised as part of the event, in which the great culture of Meghalaya was depicted in a beautiful manner," Modi said.

The PM further said, "A few weeks ago, in Karnataka, a unique campaign named Amrita Bharathi Kannadarthi was also launched. In this grand programmes related to Azadi Ka Amrit Mahotsav were organized at 75 places in the state. In these, along with remembering the great freedom fighters of Karnataka, efforts were also made to bring to the fore the local literary achievements."

He also said that this time 'Mann Ki Baat' is very special. "The reason for this is Independence Day, when India will complete 75 years of her independence. We are all going to be witness to a splendid and historic moment," he said.

He said that today we started our discussion on 75 years of Independence, with a visit across the country. "The next time we meet the journey of our next 25 years will have already begun," said Modi.

'Put Tricolour as display picture from Aug 2'

New Delhi

Prime Minister Narendra Modi on Sunday suggested people to put the Tricolour as profile pictures on their social media accounts from August 2.

Addressing his monthly radio programme 'Mann Ki Baat', the Prime Minister said: "I have a suggestion that from August 2 to 15, all of us can place the Tricolor in our social media profile pictures."

He said that under the Azadi ka Amrit Mahotsav initiative, a programme called 'Har Ghar Tiranga' will be organised from August 13-15.

"By becoming a part of this movement, from August 13 to 15, you must hoist the Tricolor at your residence, or adorn your home with it. The Tricolor connects us, inspires us to do something for the country," Modi said.

The Prime Minister mentioned that August 2 also has a special connection with our Tricolor.

"This day is the birth anniversary of Pingali Venkaiah ji who designed our national flag. I pay my respectful homage to him. Talking about our national flag, I will also remember the great revolutionary Madam Cama. Her role in shaping the Tricolor has been very important," he said.

The Prime Minister mentioned that Azadi Ka Amrit Mahotsav is taking the form of a mass movement and people from all walks of life and from every section of the society are participating in the initiative to celebrate and commemorate 75 years of independence.

He also spoke of 'Azadi Ki Railgadi, Aur Railway Station', an effort to make people understand the role of Indian Railways in the freedom struggle.

"Seventy five such railway stations have been identified spread over 24 states across the country. These stations are being decorated very ornately. Many types of programs are also being organized in these. I urge the students of the nearby school

Contd. >p3

ವಿಜಯವಾಣಿ

ಮೇನಲ್ಲಿ ಚಾಲನೆ, ಆಗಸ್ಟ್‌ನಲ್ಲಿ ಮುಕ್ತಾಯ | ಸಮಾರೋಪಕ್ಕೆ ಅಮಿತ್ ಶಾ ಆಗಮಿಸುವ ಸಾಧ್ಯತೆ

ರಾಜ್ಯ ಸರ್ಕಾರದ ಕನ್ನಡದಾರತಿಗೆ ಮೋದಿ ಮೆಚ್ಚುಗೆ

ಜೇನು ಕೃಷಿಕ ಮಧುಕೇಶ್ವರ ಹೆಸರು ಪ್ರಸ್ತಾಪ

THE TIMES OF INDIA

In Mann ki Baat, PM Narendra Modi praises Gorakhpur lad for honey startup

The Indian EXPRESS

Use Tricolour on social media, hoist flag at homes as part of Azadi Ka Amrit Mahotsav: PM Modi

The Tribune

Modi on 'Mann ki Baat': Import of toys down 70%, exports rise

Hindustan Times

5 things to know about 'Azadi ki Railgadi'- mentioned in Mann Ki Baat by PM

REPUBLICWORLD.COM

COVID-19: PM Modi Urges People To Follow Protocol; Says 'our Fight Is Still On'

ZEENEWS

Mann Ki Baat: सोशल मीडिया प्रोफाइल पर लगाएं तिरंगे की फोटो, इस बार का स्वतंत्रता दिवस होने वाला खास, देशभर में चल रही खास तैयारी

आज तक

खिलौनों के निर्यात का पावर हाउस बन रहा भारत, PM मोदी ने पेश किए आंकड़े

NBT नवभारत टाइम्स

Gorakhpur: जानिए कौन हैं निमित, पीएम मोदी ने मन की बात में की जिनके शहद की मिठास की चर्चा

पत्रिका

पीएम मोदी ने मन की बात में किया उल्लेख ऐसा होता है वो भगोरिया मेला

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए QR कोड को स्कैन करें।

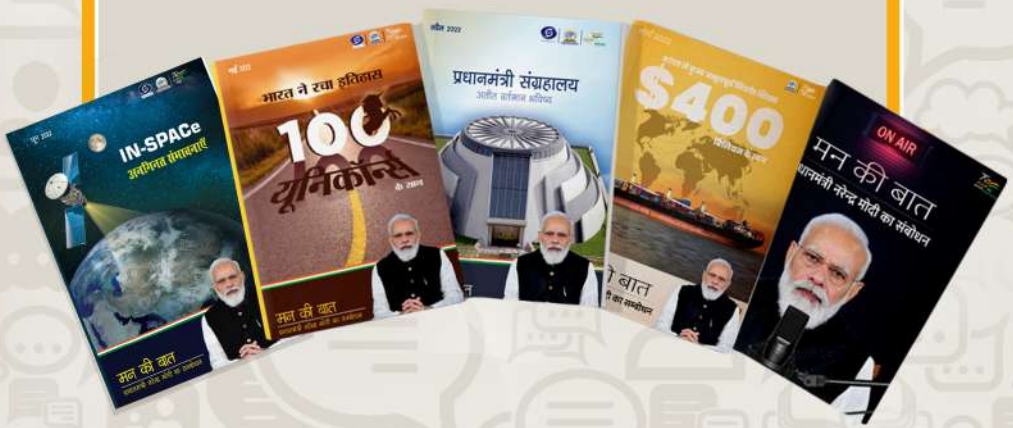

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार